Class:	**M.A.**	**Subject:**	**Music (Vocal/Instrumental)**
Semester:	**2**		
Course Type:	**Core Course**	**Course Code:**	**MUSI-202-PR**
Course Name:	**Stage Performance**	**Paper Type:**	**Practical**

MUSIC
(Stage Performance)

Lesson : 1 - 13

Dr. Mritunjay Sharma

Centre for Distance & Online Education (CDOE)
Himachal Pradesh University
Gyan Path, Summer Hill, Shimla-171005

विषय सूची

क्रम		विषय	पृ. सं.
1		विषय सूची	ii
2		प्राक्कथन	iii
3		पाठ्यक्रम	iv
4	इकाई 1	राग शुद्ध सारंग का बड़ा ख्याल (गायन के संदर्भ में)	1
5	इकाई 2	राग शुद्ध सारंग का छोटा ख्याल (गायन के संदर्भ में)	18
6	इकाई 3	राग शुद्ध सारंग की विलंबित गत (वादन के संदर्भ में)	35
7	इकाई 4	राग शुद्ध सारंग की द्रुत गत (वादन के संदर्भ में)	50
8	इकाई 5	राग बिहाग का बड़ा ख्याल (गायन के संदर्भ में)	67
9	इकाई 6	राग बिहाग का छोटा ख्याल (गायन के संदर्भ में)	83
10	इकाई 7	राग बिहाग की विलंबित गत (वादन के संदर्भ में)	96
11	इकाई 8	राग बिहाग की द्रुत गत (वादन के संदर्भ में)	110
12	इकाई 9	राग बागेश्री की विलंबित गत (वादन के संदर्भ में)	122
13	इकाई 10	राग बागेश्री की द्रुत गत (वादन के संदर्भ में)	140
14	इकाई 11	राग बागेश्री का बड़ा ख्याल (गायन के संदर्भ में)	158
15	इकाई 12	राग बागेश्री का छोटा ख्याल (गायन के संदर्भ में)	177
16	इकाई 13	ठुमरी (गायन, राग-भैरवी, त्रिताल) ठुमरी (वादन, राग-मिश्र पीलू, अद्धा ताल)	196
17		महत्वपूर्ण प्रश्न - कार्यभार	211

प्राक्कथन

संगीत स्नात्कोत्तर के नवीन पाठ्यक्रम में संगीत से सम्बन्धित उपयोगी सामग्री का समावेश किया गया है। संगीत में प्रायोगिक तथा सैद्धान्तिक दोनों पक्षों का योगदान रहता है। गायन तथा वादन में भी इन्हीं दोनों पक्षों का महत्वपूर्ण स्थान रहता है। संगीत में क्रियात्मक पक्ष के अंतर्गत मंच प्रदर्शन का भी महत्वपूर्ण स्थान रहता है। प्रस्तुत पाठ्यक्रम में संगीत की मंच प्रदर्शन परीक्षा को ध्यान में रखकर पाठ्य सामग्री दी गई है। इस पुस्तक के

इकाई 1 में गायन के संदर्भ में राग शुद्ध सारंग का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल, तानें आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 2 में गायन के संदर्भ में राग शुद्ध सारंग का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, तानों का वर्णन किया गया है।
इकाई 3 में वादन संदर्भ में राग शुद्ध सारंग का परिचय, आलाप, विलंबित गत, तोड़े आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 4 में वादन संदर्भ में राग शुद्ध सारंग का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़े आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 5 में गायन के संदर्भ में राग बिहाग का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल, तानें आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 6 में गायन के संदर्भ में राग बिहाग का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, तानें आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 7 में वादन के संदर्भ में राग बिहाग का परिचय, आलाप, विलंबित गत, तोड़े आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 8 में वादन के संदर्भ में राग बिहाग का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़े आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 9 में वादन के संदर्भ में राग बागेश्री का परिचय, आलाप, विलंबित गत, तोड़े आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 10 में वादन के संदर्भ में राग बागेश्री का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़े आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 11 में गायन के संदर्भ में राग बागेश्री का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल, तानें आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 12 में गायन के संदर्भ में राग बागेश्री का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, तानें आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 13 में ठुमरी (गायन, भैरवी, त्रिताल) तथा ठुमरी (वादन, मिश्र पीलू, अद्धा ताल का वर्णन किया गया है।
प्रत्येक इकाई में शब्दावली, महत्वपूर्ण प्रश्न, स्वयं जांच अभ्यास, संदर्भ, अनुशंसित पठन आदि दी गई है। अंत में कार्यभार (असाइनमेंन्ट) दिया गया है।

प्रस्तुत पाठ्यक्रम को लिखने के लिए स्वयं के अनुभव से, संगीतज्ञों के साक्षात्कार से तथा संगीत से सम्बन्धित पुस्तकों द्वारा शिक्षण सामग्री एकत्रित की गई है। मैं उन सभी संगीतज्ञों तथा लेखकों का आभारी हूं जिनके ज्ञान द्वारा तथा जिनकी संगीत संबंधी पुस्तकों द्वारा शिक्षण सामग्री को यहां लिया गया है। आशा है कि विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक लाभप्रद होगी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा

Syllabus
M.A. in Performing Arts (Music)
(Hindustani Vocal/Instrumental)

SEMESTER - II

Course Code	Course Type	Course Name	Paper Type	Max. Marks	ESE	CCA	Min. Pass %age ESE+CCA	Credit
MUSI-202PR	Core Course	Stage Performance	Practical	150	100	50	40+20	6

Course Objective

- To learn to perform different compositions in prescribed ragas, gaining an invaluable stage experience.
- To learn to perform the Thumri on stage.

Course Outcome

- The students will learn various prescribed ragas practically.
- The students learn to perform and present ragas on stage, in proper format before the audience.
- The students learn to perform and present Thumri on stage before the audience.

Course of Study

1. Stage Performance 80 Marks

(a) For Vocal

Student has to prepare one Vilambit & Drut Khyal, in any one Raga of his/her choice, out of the Ragas given below, with proper elaboration & all technicalities of Vocal music, and perform it (for not less than 30 minutes) before the panel of examiners.

(b) For Instrumental

Student has to prepare one Vilambit & Drut Gat, in any one Raga of his/her choice, out of the Ragas given below, with proper elaboration & all technicalities of Instrumental music, and perform it (for not less than 30 minutes) before the panel of examiners.

- Shudh Sarang
- Bihag
- Bageshree

2. Student of Vocal/Instrumental has to prepare and perform one Thumri before the panel of examiners.

. 20 Marks

इकाई-1
राग शुद्ध सारंग - बड़ा ख्याल

इकाई की रूपरेखा

1.1 भूमिका

1.2 उद्देश्य तथा परिणाम

1.3 शुद्ध सारंग राग का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल, तानें

1.3.1 शुद्ध सारंग राग का परिचय

1.3.2 शुद्ध सारंग राग का आलाप

1.3.3 शुद्ध सारंग राग का बड़ा ख्याल

1.3.4 शुद्ध सारंग राग की तानें

स्वयं जांच अभ्यास 1

1.4 सारांश

1.5 शब्दावली

1.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1.7 संदर्भ

1.8 अनुशंसित पठन

1.9 पाठगत प्रश्न

1.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग शुद्ध सारंग का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग शुद्ध सारंग के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग शुद्ध सारंग का आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को गा सकेंगे।

1.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- शुद्ध सारंग राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- शुद्ध सारंग राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- शुद्ध सारंग राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को गाने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- शुद्ध सारंग राग का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल, तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- शुद्ध सारंग राग के आलाप, बड़ा ख्याल, तानों को गाने में सक्षम होंगे।

- राग शुद्ध सारंग के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को क्रियात्मक रूप से प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

1.3 शुद्ध सारंग राग का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल, तानें

1.3.1 शुद्ध सारंग का परिचय

राग - शुद्ध सारंग

थाट – कल्याण

जाति – औड़व-षाड़व

वादी – ऋषभ

संवादी - पंचम

स्वर – दानों मध्यम तथा अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – ऋषभ, पंचम, निषाद

समय - मध्याहन

समप्रकृतिक राग – श्याम कल्याण

आरोह:- ऩी सा, $^{\text{म}}$रे, म' प, नी सां।

अवरोह:- सां नी, ध प, म' प, $^{\text{म}}$रे म रे, ऩि सा।

पकड़:- $^{\text{म}}$रे म' प, म रे, सा ऩी ऽ, ध़, तथा प़ ऩि ध़, सा ऩि रे सा

मधुर व लोकप्रिय, शुद्ध सारंग राग का थाट कल्याण है। इस राग की जाति औड़व-षाड़व है। शुद्ध सारंग राग का वादी स्वर ऋषभ तथा संवादी स्वर पंचम है। प्रस्तुत राग में इसमें दोनों मध्यम व अन्य स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इस राग का

गायन समय मध्याहन काल माना जाता है। इस राग में ऋषभ, पंचम, निषाद पर न्यास किया जाता है। यह राग सारंग अंग का एक राग है। इसमें रे म रे की संगति सारंग अंग को प्रदर्शित करती है। इस राग को मंद्र सप्तक के निषाद से प्राय: आरम्भ किया जाता है। (ऩी सा ^म^रे म म, रे)। इस राग के आरोह में तीव्र मध्यम तथा अवरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है (ऩी सा ^म^रे म॑, म॑ , प, म॑ प म रे सा)। कभी-कभी शुद्ध सारंग राग में दोनों मध्यम एक साथ भी प्रयुक्त होते हैं (सां नी ध प, म॑ प म म रे सा)। यह राग सारंग तथा कल्याण का मिश्रण है। पूर्वांग में सारंग तथा उत्तराग में कल्याण राग की छाया दिखाई देती है। अवरोह करते समय इस राग में मंद्र सप्तक के निषाद पर न्यास किया जाता है (रे म रे सा ऩि ऽ,)। स्वर संगति प़ ऩि ध़, सा ऩि रे सा इस राग की अपनी एक विशेष स्वर संगति है जो सारंग के अन्य प्रकारों में नहीं लगती। इसका समप्रकृतिक राग श्याम कल्याण है।

1.3.2 आलाप

- सा, ऩी ऩी सा रे म, रे ऩी सा, ऩी सा रे

  म म - रे म रे ऩी सा ऩी सा।

- सा ऩी ध़ प़, ऩी ध़ सा, ऩी रे, सा रे म रे,

  म रे ऩी ऩी सा रे - सा, सा सा

- सा ऽ म रे, ऩी सा म रे, म रे सा ऽऽ

  ऩी ध़ प़ ऩी सा म रे,

  रे म॑ प रे म रे ऩी सा रे म॑ प रे म

  रे प़ ऩी ध़ सा ऩी रे सा,

  म रे म॑ प ध म॑ प रे म रे,

  ऩी ध़ सा ऩी रे ऽ सा।

- ऩी सा रे मं प ऽऽ मं प प रे म रे मं मं ऽ ऽ मं प,

  मं प ध मं प, रे मं प ध ध प,

  ध प मं प रे म रे सा प म रे मं प मं

  प ऩी ध प म रे ऽ मं प,

  ऩी ध़ सा ऩी रे सा म रे

  प मं प नी ध प, रे मं

  प ध ध प ऽ ध ध प मं प,

  रे म रे ऩी सा रे मं प ध,

  मं प रे म रे म रे सा ऩी,

  ऩी ध़ सा ऩी रे सा, सा, सा

- मं प ऩी ऽ ऽ ऽ सा ऽ ऽ ऽ रें सां,

  रें नी सां, ऽ ऽ रें मं रें सां रें मं प ऽ ऽ

  मं रें रें नी सां, नी ध सां नी रे सां,

  सां नी ध प, रे मं प रे म रे

  सा ऩी ध़ सा ऩी रे सा, सा, सा ऽ

1.3.3 राग शुद्ध सारंग बड़ा ख्याल विलम्बित लय एक ताल

स्थायी

ए बन्ना बन आया, आया री मेरे द्वारे।

अन्तरा

अदारंग बन्ने सिर मोर बिराजत बनरी की मांग भराया।।

स्थायी

				12			
				नीसारेम॑प	मरेसा	–	ऩीध़प़
				एऽऽऽ	बना	ऽ	बऽन
X							
1				2			
ऩी	-	-	-	ऩीध़	साऩी	रे	-
आ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
0							
3				4			
साऩीरेसा	-	-	-	ऩी	सा	(म)रे	म॑
याऽऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	आ	ऽ	ऽ	ऽ
2							
5				6			
प	-	-	ध म॑ प	म	-	रे	-
या	ऽ	ऽ	ऽऽऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ

0

7

(म)रे	मं मं	प	-
मे	ऽ	रे	ऽ

8

प	-	-	नीसां
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ ऽ

3

9

रेंसानी	नी	धप	ध मं प
द्वा ऽ ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽऽ

10

म	-	रे	-
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

4

11

(म)रे	(रे)म	रे	सा
रे	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा

12

मरे	रेमं	प	पनी
अऽ	दाऽ	रे	ऽऽ

x

1

सां	-	-	(सां)नीरें
ग	ऽ	ऽ	ऽब

2

सांनीरेंसां	-	-	-
नेऽऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ

0							
3				4			
नी	सां	रेंमंमंरें	रेंमंमंरेंसांऩी	नी	नी	नी	सां
सि	ऽ	रऽऽऽ	ऽऽऽऽऽऽ	मो	र	बि	ऽ
2							
5				6			
रेंसांनी	ध	प	प मं धप	मरे	म	-	मरे
राऽऽ	ऽ	ऽ	जऽऽऽ	त	ऽ	ऽ	ऽ
0							
7				8			
रे	मं	प	नी	सां	नी	ध	प
ब	न	री	की	मां	ऽ	ऽ	ग
3							
9				10			
प	प मं	ध	प	मरे	रेम	रे	सा
भ	ऽऽ	ऽ	ऽ	राऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
4							
11							
ऩी	-	ऩीसारे	मरेसा				
या	ऽ	ऽऽऽ	ऽऽऽ				

1.3.4 शुद्ध सारंग राग की तानें

- ऩी ऽ सा ऽ,

  मरे - रेम -,

  मरे - सा -

  ऩी ध़प़ म़ंप़ ऩी

  ऩी - - ऩीऩी,

  सा - - -

  रेम रेसा ऩीसा ऩीऩी

  ध़प़ म़ंप़ ऩी ऩी

  सा ऩी रेसा ऩीसा

  ऩीध़ साऩी रे सा

- ऩीसारे मरेसा ऩीसा- रेमंप

  धमंप रेमरे साऩीसा रेऩीसा

  ममरेसा रेमरेसा ऩीध़साऩी रेसा--

  रेमंपध मंपरेम पनीधप ममरेसा

  पनीसांनी धपमंप रेमपनी सारेंसांनी

  धपमंप रेमपध मंपरेम रेसाऩीसा

  ऩीध़प़- मंप़ऩीसा ऩीध़साऩी रेसाऩीसा

सांनीसांप	नीसांनीध	पर्मप-	ममरेसा

सा़नीध़प़मंप़नीसा — मरे़नीधसा़नीरेसा

नीनीधपरेमरेसा — पनीसांनीरेमरेसा

ममरेसाममरेसा — रेमरेसारेमरेसा

ऩीध़सा़नीऩीध़ — सा़नीऩीध़सा़नी

ऩीऩीसा-	ऩीरेऩीसा	रेमंपध	मंपमरे
ऩीऩीऩीरे	ऩीसारेम	पधमंप	मंपमरे
ऩीरेसाऩी	प़ऩीसारे	मरेसाऩी	रे-सा-
रेमंपनी	पधमंप	नीधसांनी	रें-मंपं
सांनीधप	ममरेऩी	रेऩीसा-	ऩीध़सा-
ऩीरेसा-			

ऩिसा	रेसा	ऩिसा	रेरे
मम	रेसा	ऩिसा	रेसा

- प़प़प़,प़प़प़,प़प़, — ऩीऩीऩी,ऩीऩीऩी,ऩीऩी,

  सासासा,सासासा,सासा, — रेरेरे,रेरेरे,रेरे,

  ममम,ममम,मम, — रेरेरे,रेरेरे,रेरे,

  मंमंमं,मंमंमं,मंमं, — पपप,पपप,पप,

  मंमंमं,मंमंमं,मंमं, — धधध,धधध,धध,

पपप,पपप,पप,	नीनीनी,नीनीनी,नीनी,
सांसांसां,सांसांसां,सांसां,	रेंरेंरें,रेंरेंरें,रेंरें,
मंमंमं,मंमंमं,मंमं,	रेंरेंरें,रेंरेंरें,रेंरें,
मंमंमं,मंमंमं,मंमं,	रेंरेंरें,रेंरेंरें,रेंरें,
सांसांसां,सांसांसां,सांसां,	नीनीनी,नीनीनी,नीनी,
धधध,धधध,धध,	पपप,पपप,पप,
म॑म॑म॑,म॑म॑म॑,म॑म॑,	पपप,पपप,पप,
म॑म॑म॑,म॑म॑म॑,म॑म॑,	ममम,ममम,मम,
रेरेरे,रेरेरे,रेरे,	सासासा,सासासा,सासा,
नीनीनी,नीनीनी,नीनी,	सासासा,सासासा,सासा,
रेमरेसाऩीऽ रेम	रेसाऩीऽ रेमरेसा

- प़प़प़,प़प़प़, — ऩीऩीऩी,ऩीऩीऩी,

सासासा,सासासा,	रेरेरे,रेरेरे,
ममम,ममम,	रेरेरे,रेरेरे,
म॑म॑म॑,म॑म॑म॑,	पपप,पपप,
म॑म॑म॑,म॑म॑म॑,	धधध,धधध,
पपप,पपप,	नीनीनी,नीनीनी,
सांसांसां,सांसांसां,	रेंरेंरें,रेंरेंरें,

मंमंमं,मंमंमं,

मंमंमं,मंमंमं,

सांसांसां,सांसांसां,

धधध,धधध,

मं॑मं॑मं॑,मं॑मं॑मं॑,

मं॑मं॑मं॑,मं॑मं॑मं॑,

रेरेरे,रेरेरे,

नीनीनी,नीनीनी,

रेसाऩीऽऽरे

- प़प़प़,प़प़,

सासासा,सासा,

ममम,मम,

मं॑मं॑मं॑,मं॑मं॑,

मं॑मं॑मं॑,मं॑मं॑,

पपप,पप,

सांसांसां,सांसां,

मंमंमं,मंमं,

मंमंमं,मंमं,

रेंरेंरें,रेंरें,

रेंरेंरें,रेंरें,

नीनीनी,नीनीनी,

पपप,पपप,

पपप,पपप,

ममम,ममम,

सासासा,सासासा,

सासासा,सासासा,

साऩीऽऽरेसा

ऩीऩीऩी,ऩीऩी,

रेरेरे,रेरे,

रेरेरे,रेरे,

पपप,पप,

धधध,धध,

नीनीनी,नीनी,

रेंरेंरें,रेंरें,

रेंरेंरें,रेंरें,

रेंरेंरें,रेंरें,

सांसांसां,सांसां,	नीनीनी,नीनी,
धधध,धध,	पपप,पप,
मंमंमं,मंमं,	पपप,पप,
मंमंमं,मंमं,	ममम,मम,
रेरेरे,रेरे,	सासासा,सासा,
नीनीनी,नीनी,	सासासा,सासा,
रेसाऩ़ीऽरे	साऩ़ीऽरेसा

• ऩ़ीसारेऩ़ीसारेऩ़ीसा	नीसांरेंनीसांरेंनीसां
मंमंरेंमंमंरेंमंमं	मंमंरेंसांनीसांरेंसां
रेंमंरेंमंरेंसांनीसां	नीसांनीनीसांनीनीसां
नीनीधपनीनीधप	मंपधमंपधमंप
मंमंमंपपपनीनी	धपमंपधपमंप
रेमरेमरेमरेसा	ऩ़ीसारेमरेसाऩ़ीसा
ऩ़ीसारेऩ़ीसारेऩ़ीसा	ऩ़ीऽऽऽऩ़ीसारेऩ़ी
सारेऩ़ीसाऩ़ीऽऽऽ	ऩ़ीसारेऩ़ीसारेऩ़ीसा

स्वयं जांच अभ्यास 1

1.1 राग शुद्ध सारंग का संवादी स्वर कौन सा है?

(क) प

(ख) नी

(ग) ग

(घ) सा

1.2 राग शुद्ध सारंग का वादी स्वर कौन सा है?

(क) मं

(ख) रे

(ग) ग

(घ) सा

1.3 राग शुद्ध सारंग को अधिकतर किस स्वर से आरम्भ किया जाता है?

(क) मं

(ख) प़

(ग) नी़

(घ) सा

1.4 राग शुद्ध सारंग की मुख्य स्वरसंगति कौन सी है?

(क) मगम

(ख) रे म प

(ग) सानी़सा

(घ) मरेमरेसा

1.5 राग शुद्ध सारंग का समप्रकृतिक राग कौन सा है?

(क) श्याम कल्याण

(ख) पूरिया धनाश्री

(ग) सारंग

(घ) हंसध्वनि

1.6 राग शुद्ध सारंग किन रागों का मिश्रण है?

(क) कल्याण तथा यमन

(ख) सारंग तथा कल्याण

(ग) सोहनी तथा पूरिया

(घ) पूरिया तथा मारवा

1.7. राग शुद्ध सारंग के आरोह में किस स्वर का प्रयोग नहीं होता है?

(क) मं

(ख) प़

(ग) ध

(घ) नी

1.4 सारांश

शुद्ध सारंग राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत गायन के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। यह राग सारंग अंग का एक राग है। सबसे पहले आलाप, उसके पश्चात विलंबित लय में बड़ा ख्याल तथा द्रुत लय में छोटे ख्याल को गाया जाता है। इन में तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें लयकारियों के साथ गाया जाता है। कल्याण थाट के इस राग की जाति औड़व-षाड़व है जिसका वादी स्वर ऋषभ तथा संवादी स्वर पंचम है। इसमें दोनों मध्यम व अन्य स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इसमें रे म रे की संगति सारंग अंग को प्रदर्शित करती है। इस राग को मंद्र सप्तक के निषाद से प्राय: आरम्भ किया जाता है। (ऩी सा मरे म म, रे)। इस राग के आरोह में तीव्र मध्यम तथा अवरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है (ऩी सा मरे मं, मं, प, मं प म रे सा)। इसका समप्रकृतिक राग श्याम कल्याण है।

1.5 शब्दावली

- विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, तालबद्ध व लयबद्ध हो तथा विलंबित लय में गाई जाती हो उसे बड़ा ख्याल कहते हैं।

- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।
- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।

1.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

1.1 (क)

1.2 (ख)

1.3 (ग)

1.4 (घ)

1.5 (क)

1.6 (ख)

1.7 (ग)

1.7 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

1.8 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

1.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग शुद्ध सारंग का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग शुद्ध सारंग में आलाप को लिखिए।

प्रश्न 3. राग शुद्ध सारंग में बड़े ख्याल को लिखिए।

प्रश्न 4. राग शुद्ध सारंग में बड़े ख्याल की तानों को लिखिए।

प्रश्न 5. राग शुद्ध सारंग में आलाप को गा कर सुनाइए।

प्रश्न 6. राग शुद्ध सारंग में बड़े ख्याल को गा कर सुनाइए।

प्रश्न 7. राग शुद्ध सारंग में बड़े ख्याल की तानों को गा कर सुनाइए।

इकाई-2
राग शुद्ध सारंग - छोटा ख्याल

इकाई की रूपरेखा

2.1 भूमिका

2.2 उद्देश्य तथा परिणाम

2.3 शुद्ध सारंग राग का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, तानें

- 2.3.1 शुद्ध सारंग राग का परिचय
- 2.3.2 शुद्ध सारंग राग का आलाप
- 2.3.3 शुद्ध सारंग राग का छोटा ख्याल
- 2.3.4 शुद्ध सारंग राग की तानें

स्वयं जांच अभ्यास 1

2.4 सारांश

2.5 शब्दावली

2.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

2.7 संदर्भ

2.8 अनुशंसित पठन

2.9 पाठगत प्रश्न

2.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग शुद्ध सारंग का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग शुद्ध सारंग के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग शुद्ध सारंग का आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गा सकेंगे।

2.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- शुद्ध सारंग राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- शुद्ध सारंग राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- शुद्ध सारंग राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गाने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- शुद्ध सारंग राग का परिचय, आलाप, छोटा, तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

- शुद्ध सारंग राग के आलाप, छोटा ख्याल, तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग शुद्ध सारंग के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को क्रियात्मक रूप से प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

2.3 शुद्ध सारंग राग का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, तानें

2.3.1 शुद्ध सारंग राग का परिचय

राग - शुद्ध सारंग

थाट – कल्याण

जाति – औड़व-षाड़व

वादी – ऋषभ

संवादी - पंचम

स्वर – दानों मध्यम तथा अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – ऋषभ, पंचम, निषाद

समय - मध्याहन

समप्रकृतिक राग – श्याम कल्याण

आरोह:- ऩी सा, ^{म}रे, म॑ प, नी सां।

अवरोह:- सां नी, ध प, म॑ प, ^{म}रे म रे, ऩि सा।

पकड़:- ^{म}रे म॑ प, म रे, सा ऩी ऽ, ध़, तथा प़ ऩि ध़, सा ऩि रे सा

मधुर व लोकप्रिय, शुद्ध सारंग राग का थाट कल्याण है। इस राग की जाति औड़व-षाड़व है। शुद्ध सारंग राग का वादी स्वर ऋषभ तथा संवादी स्वर पंचम है। प्रस्तुत राग में इसमें दोनों मध्यम व अन्य स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इस राग का गायन समय मध्याहन काल माना जाता है। इस राग में ऋषभ, पंचम, निषाद पर न्यास किया जाता है। यह राग सारंग अंग का एक राग है। इसमें रे म रे की संगति सारंग अंग को प्रदर्शित करती है। इस राग को मंद्र सप्तक के निषाद से प्राय: आरम्भ किया जाता है। (ऩी सा मरे म म, रे)। इस राग के आरोह में तीव्र मध्यम तथा अवरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है (ऩी सा मरे मं, मं , प, मं प म रे सा)। कभी-कभी शुद्ध सारंग राग में दोनों मध्यम एक साथ भी प्रयुक्त होते हैं (सां नी ध प, मं प म म रे सा)। यह राग सारंग तथा कल्याण का मिश्रण है। पूर्वांग में सारंग तथा उत्तराग में कल्याण राग की छाया दिखाई देती है। अवरोह करते समय इस राग में मंद्र सप्तक के निषाद पर न्यास किया जाता है (रे म रे सा ऩि ऽ,)। स्वर संगति प़ ऩि ध़, सा ऩि रे सा इस राग की अपनी एक विशेष स्वर संगति है जो सारंग के अन्य प्रकारों में नहीं लगती। इसका समप्रकृतिक राग श्याम कल्याण है।

2.3.2 आलाप

- सा, ऩी ऩी सा रे म, रे ऩी सा, ऩी सा रे

  म म - रे म रे ऩी सा ऩी सा।

- सा ऩी ध़ प़, ऩी ध़ सा, ऩी रे, सा रे म रे,

  म रे ऩी ऩी सा रे - सा, सा सा

- सा ऽ म रे, ऩी सा म रे, म रे सा ऽऽ

  ऩी ध़ प़ ऩी सा म रे,

  रे मं प रे म रे ऩी सा रे मं प रे म

  रे प़ ऩी ध़ सा ऩी रे सा,

  म रे मं प ध मं प रे म रे,

ऩी ध़ सा ऩी रे ऽ सा।

- ऩी सा रे मं प ऽऽ मं प प रे म रे मं मं ऽ ऽ मं प,

  मं प ध मं प, रे मं प ध ध प,

  ध प मं प रे म रे सा प म रे मं प मं

  प ऩी ध प म रे ऽ मं प,

  ऩी ध़ सा ऩी रे सा म रे

  प मं प नी ध प, रे मं

  प ध ध प ऽ ध ध प मं प,

  रे म रे ऩी सा रे मं प ध,

  मं प रे म रे म रे सा ऩी,

  ऩी ध़ सा ऩी रे सा, सा, सा

- मं प ऩी ऽ ऽ ऽ सा ऽ ऽ ऽ रें सां,

  रें नी सां, ऽ ऽ रें मं रें सां रें मं प ऽ ऽ

  मं रें रें नी सां, नी ध सां नी रे सां,

  सां नी ध प, रे मं प रे म रे

  सा ऩी ध़ सा ऩी रे सा, सा, सा ऽ

2.3.3 शुद्ध सारंग का छोटा ख्याल

स्थाई

अब मोरी बात मान ले पियरवा,

जाऊं तोपे वारी वारी वारी।

अन्तरा

प्रेम पिया मुख से नाहीं बोलत

बिनती करत मैं हारी हारी हारी।।

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
											म	रे	ऩी	-	(सा)
											अ	ब	मो	ऽ	री
ऩी	-	प	-	ऩी	ध़	सा	ऩी	रे	-	सा					
बा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	त					
											ऩी	सा	मरे	-	मं
											मा	न	ले	ऽ	पि
मं	-	प	-	मं	प	-	(प)	ैरे	-	सा	रे	मं	प	नी	सां
य	ऽ	र	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	वा	ऽ	ऽ	जा	ऊं	तो	ऽ	पे
नी	ध	प	ध	मं	प	रे	मम	रेरे	साऩी	सा					
वा	ऽ	री	वा	ऽ	री	वा	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	री					

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
अन्तरा															
								रे	-	म'	प	नी	सां	नी	सां
								प्रे	ऽ	म	पि	या	ऽ	मु	ख
रें	मं	रें	सां	नी	-	म'	प								
से	ऽ	ना	हीं	बो	ऽ	ल	त								
								प	नी	सां	रें	नी	सां-	नी	ध
								बि	न	ति	क	र	त	मैं	ऽऽ
ध	म'	प	रे	म	रे	रे	मम	रेरे	साऩी	सा					
हा	ऽ	री	हा	ऽ	री	हा	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	री					
											म	रे	ऩी	-	(सा)
											अ	ब	मो	ऽ	री
ऩी	-	प	-	ऩी	ध़	सा	ऩी	रे	-	सा					
बा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	त					

2.3.4 शुद्ध सारंग राग की तानें

- मम रेसा ऩीसा रेसा रेम॑ परे मप
- पप म॑प धप म॑प रेसा रेसा ऩीसा
- नीनी धप धम॑ परे मरे साऩी सा-
- धध पध म॑प रेम रेसा ऩीसा
- मम रेसा ऩीसा नीनी धप म॑प रेम
  रेसा ऩीऩी सा- सा-
- ऩीसा रेम पनी सांसां नीध पम॑ परे
  मरे सासा ऩीसा
- ऩीसा रेम रेसा ऩीसा ऩीध़ प़ध़ म॑प़ ऩीसा
  रेम॑ पम रेसा
- पप म॑प धप म॑प नीसां नींरें नीसां नीप
  मम रेसा ऩीसा
- रेम रेम॑ पध म॑ध म॑प मरे ऩींरे ऩीसा
  साऩी पऩी रेऩी
- पनी सारें नीसां नीध पनी
  रेंरें मंमं रेंसां प्रेम पिया------

- पसां नीध सांनी रें- मम

  रेप पम॑ पप प्रेम पिया------

- ऩीसा मम रेसा ऩीरे नीप धप पम

  रेसा ऩीसा रेम॑ पसां नीध पम॑ धप

  म॑ध म॑प मम रेप म॑प सां- नीरें

  मंमं रेंसां नीसां प्रेम पिया------

- अ ब - - - - - - - - मो - - री - - बा - - - - - - - त पि - य - - - र - - वा

  म म रे सा - - - ऩी रे सा नी ध प म॑ ध प ध म॑ प म म रे सा ऩी सा म म रे म रे रे सा ऩी ऩी सा

- प़प़ प़,प़ प़प़, प़प़,

  ऩीऩी ऩी,ऩी ऩीऩी, ऩीऩी,

  सासा सा,सा सासा, सासा,

  रेरे रे,रे रेरे, रेरे,

  मम म,म मम, मम,

  रेरे रे,रे रेरे, रेरे,

  म॑म॑ म॑,म॑ म॑म॑, म॑म॑,

  पप प,प पप, पप,

  म॑म॑ म॑,म॑ म॑म॑, म॑म॑,

  धध ध,ध धध, धध,

पप	प,प	पप,	पप,
नीनी	नी,नी	नीनी,	नीनी,
सांसां	सां,सां	सांसां,	सांसां,
रेंरें	रें,रें	रेंरें,	रेंरें,
मंमं	मं,मं	मंमं,	मंमं,
रेंरें	रें,रें	रेंरें,	रेंरें,
मंमं	मं,मं	मंमं,	मंमं,
रेंरें	रें,रें	रेंरें,	रेंरें,
सांसां	सां,सां	सांसां,	सांसां,
नीनी	नी,नी	नीनी,	नीनी,
धध	ध,ध	धध,	धध,
पप	प,प	पप,	पप,
मंमं	मं,मं	मंमं,	मंमं,
पप	प,प	पप,	पप,
मंमं	मं,मं	मंमं,	मंमं,
मम	म,म	मम,	मम,
रेरे	रे,रे	रेरे,	रेरे,
सासा	सा,सा	सासा,	सासा,
नीनी	नी,नी	नीनी,	नीनी,

सासा सा,सा सासा, सासा,

रेम रेसा ऩीऽ रेम

रेसा ऩीऽ रेम रेसा

- ऩ़ऩ़ऩ़, ऩ़ऩ़ऩ़, ऩीऩीऩी, ऩीऩीऩी,

  सासासा, सासासा, रेरेरे, रेरेरे,

  ममम, ममम, रेरेरे, रेरेरे,

  मंमंमं, मंमंमं, पपप, पपप,

  मंमंमं, मंमंमं, धधध, धधध,

  पपप, पपप, नीनीनी, नीनीनी,

  सांसांसां, सांसांसां, रेंरेंरें, रेंरेंरें,

  मंमंमं, मंमंमं, रेंरेंरें, रेंरेंरें,

  मंमंमं, मंमंमं, रेंरेंरें, रेंरेंरें,

  सांसांसां, सांसांसां, नीनीनी, नीनीनी,

  धधध, धधध, पपप, पपप,

  मंमंमं, मंमंमं, पपप, पपप,

  मंमंमं, मंमंमं, ममम, ममम,

  रेरेरे, रेरेरे, सासासा, सासासा,

  नीनीनी, नीनीनी, सासासा, सासासा,

रेसाऩी	ऽऽरे	साऩीऽ	ऽरेसा
ऩ़ऩ़,	ऩ़ऩ़,	ऩीऩी,	ऩीऩी,
सासा,	सासा,	रेरे,	रेरे,
मम,	मम,	रेरे,	रेरे,
मंमं,	मंमं,	पप,	पप,
मंमं,	मंमं,	धध,	धध,
पप,	पप,	नीनी,	नीनी,
सांसां,	सांसां,	रेंरें,	रेंरें,
मंमं,	मंमं,	रेंरें,	रेंरें,
मंमं,	मंमं,	रेंरें,	रेंरें,
सांसां,	सांसां,	नीनी,	नीनी,
धध,	धध,	पप,	पप,
मंमं,	मंमं,	पप,	पप,
मंमं,	मंमं,	मम,	मम,
रेरे,	रेरे,	सासा,	सासा,
नीनी,	नीनी,	सासा,	सासा,
रेसा	ऩीरे	साऩी	रेसा

• ऩीसा	रेऩी	सारे	ऩीसा
नीसां	रेंनी	सांरें	नीसां
मंमं	रेंमं	मंरें	मंमं
मंमं	रेंसां	नीसां	रेंसां
रेंमं	रेंमं	रेंसां	नीसां
नीसां	नीनी	सांनी	नीसां
नीनी	धप	नीनी	धप
मंप	धमं	पध	मंप
मंमं	मंप	पप	नीनी
धप	मंप	धप	मंप
रेम	रेम	रेम	रेसा
ऩीसा	रेम	रेसा	ऩीसा
ऩीसा	रेऩी	सारे	ऩीसा
ऩीऽ	ऽऽ	ऩीसा	रेऩी
सारे	ऩीसा	ऩीऽ	ऽऽ
ऩीसा	रेऩी	सारे	ऩीसा

स्वयं जांच अभ्यास 1

2.1 राग शुद्ध सारंग का समप्रकृतिक राग कौन सा है?

(क) श्याम कल्याण

(ख) पूरिया धनाश्री

(ग) सारंग

(घ) हंसध्वनि

2.2 राग शुद्ध सारंग किन रागों का मिश्रण है?

(क) कल्याण तथा यमन

(ख) सारंग तथा कल्याण

(ग) सोहनी तथा पूरिया

(घ) पूरिया तथा मारवा

2.3. राग शुद्ध सारंग के आरोह में किस स्वर का प्रयोग नहीं होता है?

(क) मं

(ख) प़

(ग) ध

(घ) नी

2.4 राग शुद्ध सारंग की मुख्य स्वरसंगति कौन सी है?

(क) मगम

(ख) रे म प

(ग) साऩीसा

(घ) मरेमरेसा

2.5 राग शुद्ध सारंग का संवादी स्वर कौन सा है?

(क) प

(ख) नी

(ग) ग

(घ) सा

2.6 राग शुद्ध सारंग का वादी स्वर कौन सा है?

(क) म॑

(ख) रे

(ग) ग

(घ) सा

2.7 राग शुद्ध सारंग को अधिकतर किस स्वर से आरम्भ किया जाता है?

(क) म॑

(ख) प़

(ग) ऩी

(घ) सा

2.4 सारांश

शुद्ध सारंग राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत गायन के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। यह राग सारंग अंग का एक राग है। सबसे पहले आलाप, उसके पश्चात विलंबित लय में बड़ा ख्याल तथा द्रुत लय में छोटे ख्याल को गाया जाता है। इन में तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें लयकारियों के साथ गाया जाता है। कल्याण थाट के इस राग की जाति औड़व-षाड़व है जिसका वादी स्वर ऋषभ तथा संवादी स्वर पंचम है। इसमें दोनों मध्यम व अन्य स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इसमें रे म रे की संगति सारंग अंग को प्रदर्शित करती है। इस राग को मंद्र सप्तक के निषाद से प्राय: आरम्भ किया जाता है। (ऩी सा मरे म म, रे)। इस राग के आरोह में तीव्र मध्यम तथा अवरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है (ऩी सा मरे म॑, म॑, प, म॑ प म रे सा)। इसका समप्रकृतिक राग श्याम कल्याण है।

2.5 शब्दावली

- छोटा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।

- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।
- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

2.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

2.1 (क)

2.2 (ख)

2.3 (ग)

2.4 (घ)

2.5 (क)

2.6 (ख)

2.7 (ग)

2.7 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

2.8 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

2.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग शुद्ध सारंग का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग शुद्ध सारंग के आलाप को लिखिए।

प्रश्न 3. राग शुद्ध सारंग में छोटा ख्याल को तानों सहित लिखिए।

प्रश्न 4 राग शुद्ध सारंग के आलाप को गा कर सुनाइए।

प्रश्न 5. राग शुद्ध सारंग के छोटा ख्याल को तानों सहित गा कर सुनाइए।

इकाई-3
राग शुद्ध सारंग - विलम्बित गत

इकाई की रूपरेखा

3.1 भूमिका

3.2 उद्देश्य तथा परिणाम

3.3 शुद्ध सारंग राग का परिचय, आलाप, विलम्बित गत, तोड़े

- 3.3.1 शुद्ध सारंग राग का परिचय
- 3.3.2 शुद्ध सारंग राग का आलाप
- 3.3.3 शुद्ध सारंग राग का विलम्बित गत
- 3.3.4 शुद्ध सारंग राग की तोड़े

स्वयं जांच अभ्यास 1

3.4 सारांश

3.5 शब्दावली

3.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

3.7 संदर्भ

3.8 अनुशंसित पठन

3.9 पाठगत प्रश्न

3.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग शुद्ध सारंग का परिचय, आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग शुद्ध सारंग के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग शुद्ध सारंग का आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

3.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- शुद्ध सारंग राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- शुद्ध सारंग के आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- शुद्ध सारंग राग के आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- शुद्ध सारंग राग का परिचय, आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- शुद्ध सारंग राग के आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।

- राग शुद्ध सारंग के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को क्रियात्मक रूप से प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

3.3 शुद्ध सारंग राग का परिचय, आलाप, विलंबित गत, तोड़े

3.3.1 शुद्ध सारंग राग का परिचय

राग - शुद्ध सारंग

थाट – कल्याण

जाति – औड़व-षाड़व

वादी – ऋषभ

संवादी - पंचम

स्वर – दानों मध्यम तथा अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – ऋषभ, पंचम, निषाद

समय - मध्याहन

समप्रकृतिक राग – श्याम कल्याण

आरोहः- ऩी सा, मरे, मं प, नी सां।

अवरोहः- सां नी, ध प, मं प, मरे म रे, ऩि सा।

पकड़ः- मरे मं प, म रे, सा ऩी ऽ, ध़, तथा प़ ऩि ध़, सा ऩि रे सा

मधुर व लोकप्रिय, शुद्ध सारंग राग का थाट कल्याण है। इस राग की जाति औड़व-षाड़व है। शुद्ध सारंग राग का वादी स्वर ऋषभ तथा संवादी स्वर पंचम है। प्रस्तुत राग में इसमें दोनों मध्यम व अन्य स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इस राग का

गायन समय मध्याहन काल माना जाता है। इस राग में ऋषभ, पंचम, निषाद पर न्यास किया जाता है। यह राग सारंग अंग का एक राग है। इसमें रे म रे की संगति सारंग अंग को प्रदर्शित करती है। इस राग को मंद्र सप्तक के निषाद से प्राय: आरम्भ किया जाता है। (ऩी सा "रे म म, रे)। इस राग के आरोह में तीव्र मध्यम तथा अवरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है (ऩी सा "रे मं, मं , प, मं प म रे सा)। कभी-कभी शुद्ध सारंग राग में दोनों मध्यम एक साथ भी प्रयुक्त होते हैं (सां नी ध प, मं प म म रे सा)। यह राग सारंग तथा कल्याण का मिश्रण है। पूर्वांग में सारंग तथा उत्तराग में कल्याण राग की छाया दिखाई देती है। अवरोह करते समय इस राग में मंद्र सप्तक के निषाद पर न्यास किया जाता है (रे म रे सा ऩि ऽ,)। स्वर संगति प़ ऩि ध़, सा ऩि रे सा इस राग की अपनी एक विशेष स्वर संगति है जो सारंग के अन्य प्रकारों में नहीं लगती। इसका समप्रकृतिक राग श्याम कल्याण है।

3.3.2 आलाप

- सा, ऩी ऩी सा रे म, रे ऩी सा, ऩी सा रे

  म म - रे म रे ऩी सा ऩी सा।

- सा ऩी ध़ प़, ऩी ध़ सा, ऩी रे, सा रे म रे,

  म रे ऩी ऩी सा रे - सा, सा सा

- सा ऽ म रे, ऩी सा म रे, म रे सा ऽऽ

  ऩी ध़ प़ ऩी सा म रे,

  रे मं प रे म रे ऩी सा रे मं प रे म

  रे प़ ऩी ध़ सा ऩी रे सा,

  म रे मं प ध मं प रे म रे,

  ऩी ध़ सा ऩी रे ऽ सा।

- ऩी सा रे मं प ऽऽ मं प प रे म रे मं मं ऽ ऽ मं प,

  मं प ध मं प, रे मं प ध ध प,

  ध प मं प रे म रे सा प म रे मं प मं

  प ऩी ध प म रे ऽ मं प,

  ऩी ध़ सा ऩी रे सा म रे

  प मं प नी ध प, रे मं

  प ध ध प ऽ ध ध प मं प,

  रे म रे ऩी सा रे मं प ध,

  मं प रे म रे म रे सा ऩी,

  ऩी ध़ सा ऩी रे सा, सा, सा

- मं प ऩी ऽ ऽ ऽ सा ऽ ऽ ऽ रें सां,

  रें नी सां, ऽ ऽ रें मं रें सां रें मं प ऽ ऽ

  मं रें रें नी सां, नी ध सां नी रे सां,

  सां नी ध प, रे मं प रे म रे

  सा ऩी ध़ सा ऩी रे सा, सा, सा ऽ

3.3.3 शुद्ध सारंग विलंबित गत तीन ताल

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
											रेम	रे	ऩिसा	ऩि	ऩिऩिध़प़म॑प़
											दिर	दा	दिर	दा	रा
ऩि	ऩि	सा	ऩिम	रे	म॑म॑	प	धम॑प	रेम	रे	ऩिसा					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					
अन्तरा															
											ऩिसा	(म)रे	म॑म॑	प	नि
											दिर	दा	दिर	दा	रा
सां	सां	सां	(सां)	नि	सांसां	रें	मं	रें	निरें	सां					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					
											निसां	रें	मंमं	रें	सा
											दिर	दा	दिर	दा	रा
नि	ध	प	म॑प	नि	सांसां	नि	धप	मम	ऽरे	ऩिसा					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					

3.3.4 शुद्ध सारंग राग के तोड़े

- ऩीऩीसा- ऩीरेऩीसा रेमपध मपमरे

  ऩीऩीऩीरे ऩीसारेम पधमप मपमरे

  ऩीरेसाऩी पऩीसारे मरेसाऩी रे-सा-

  रेमपनी पधमप नीधसांनी रें-मँपं

  सांनीधप ममरेऩी रेऩीसा- ऩीध़सा-

  ऩीरेसा-

- ऩिसा रेसा ऩिसा रेरे

  मम रेसा ऩिसा रेसा

- ऩी ऽ सा ऽ,

  मरे - रेम -,

  मरे - सा -

  ऩी ध़प़ म़प़ ऩी

  ऩी - - ऩीऩी,

  सा - - -

  रेम रेसा ऩीसा ऩीऩी

  ध़प़ म़प़ ऩी ऩी

  सा ऩी रेसा ऩीसा

ऩीध़ साऩी रे सा

- ऩीसारे मरेसा ऩीसा- रेमंप

  धमंप रेमरे साऩीसा रेऩीसा

  ममरेसा रेमरेसा ऩीध़साऩी रेसा--

  रेमंपध मंपरेम पनीधप ममरेसा

  पनीसांनी धपमंप रेमपनी सारेंसांनी

  धपमंप रेमपध मंपरेम रेसाऩीसा

  ऩीध़प़- मंप़ऩीसा ऩीध़साऩी रेसाऩीसा

  सांनीसांप नीसांनीध पमंप- ममरेसा

  साऩीध़प़मंपऩीसा मरेऩीधसाऩीरेसा

  नीनीधपरेमरेसा पनीसांनीरेमरेसा

  ममरेसाममरेसा रेमरेसारेमरेसा

  ऩीध़साऩीऩीध़ साऩीऩीध़साऩी

- प़प़प़,प़प़प़,प़प़, ऩीऩीऩी,ऩीऩीऩी,ऩीऩी,

  सासासा,सासासा,सासा, रेरेरे,रेरेरे,रेरे,

  ममम,ममम,मम, रेरेरे,रेरेरे,रेरे,

  मंमंम,मंमंम,मंम, पपप,पपप,पप,

  मंमंम,मंमंम,मंम, धधध,धधध,धध,

पपप,पपप,पप,	नीनीनी,नीनीनी,नीनी,
सांसांसां,सांसांसां,सांसां,	रेंरेंरें,रेंरेंरें,रेंरें,
मंमंमं,मंमंमं,मंमं,	रेंरेंरें,रेंरेंरें,रेंरें,
मंमंमं,मंमंमं,मंमं,	रेंरेंरें,रेंरेंरें,रेंरें,
सांसांसां,सांसांसां,सांसां,	नीनीनी,नीनीनी,नीनी,
धधध,धधध,धध,	पपप,पपप,पप,
म॑म॑म॑,म॑म॑म॑,म॑म॑,	पपप,पपप,पप,
म॑म॑म॑,म॑म॑म॑,म॑म॑,	ममम,ममम,मम,
रेरेरे,रेरेरे,रेरे,	सासासा,सासासा,सासा,
नीनीनी,नीनीनी,नीनी,	सासासा,सासासा,सासा,
रेमरेसाऩीऽ रेम	रेसाऩीऽ रेमरेसा

● प़प़प़,प़प़प़,	ऩीऩीऩी,ऩीऩीऩी,
सासासा,सासासा,	रेरेरे,रेरेरे,
ममम,ममम,	रेरेरे,रेरेरे,
म॑म॑म॑,म॑म॑म॑,	पपप,पपप,
म॑म॑म॑,म॑म॑म॑,	धधध,धधध,
पपप,पपप,	नीनीनी,नीनीनी,
सांसांसां,सांसांसां,	रेंरेंरें,रेंरेंरें,

मंमंमं,मंमंमं,

मंमंमं,मंमंमं,

सांसांसां,सांसांसां,

धधध,धधध,

मं॑मं॑मं॑,मं॑मं॑मं॑,

मं॑मं॑मं॑,मं॑मं॑मं॑,

रेरेरे,रेरेरे,

नीनीनी,नीनीनी,

रेसाऩीऽऽरे

- प़प़प़,प़प़,

सासासा,सासा,

ममम,मम,

मं॑मं॑मं॑,मं॑मं॑,

मं॑मं॑मं॑,मं॑मं॑,

पपप,पप,

सांसांसां,सांसां,

मंमंमं,मंमं,

मंमंमं,मंमं,

रेंरेंरें,रेंरें,

रेंरेंरें,रेंरें,

नीनीनी,नीनीनी,

पपप,पपप,

पपप,पपप,

ममम,ममम,

सासासा,सासासा,

सासासा,सासासा,

साऩीऽऽरेसा

ऩीऩीऩी,ऩीऩी,

रेरेरे,रेरे,

रेरेरे,रेरे,

पपप,पप,

धधध,धध,

नीनीनी,नीनी,

रेंरेंरें,रेंरें,

रेंरेंरें,रेंरें,

रेंरेंरें,रेंरें,

सांसांसां,सांसां,	नीनीनी,नीनी,
धधध,धध,	पपप,पप,
म॑म॑म॑,म॑म॑,	पपप,पप,
म॑म॑म॑,म॑म॑,	ममम,मम,
रेरेरे,रेरे,	सासासा,सासा,
नीनीनी,नीनी,	सासासा,सासा,
रेसाऩीऽरे	साऩीऽरेसा

- ऩीसारेऩीसारेऩीसा — नीसारेंनीसारेंनीसां
  मंमरेंमंमरेंमंमं — मंमरेंसांनीसारेंसां
  रेंमरेंमरेंसांनीसां — नीसांनीनीसांनीनीसां
  नीनीधपनीनीधप — म॑पधम॑पधम॑प
  म॑म॑म॑पपपनीनी — धपम॑पधपम॑प
  रेमरेमरेमरेसा — ऩीसारेमरेसाऩीसा
  ऩीसारेऩीसारेऩीसा — ऩीऽऽऽऩीसारेऩी
  सारेऩीसाऩीऽऽऽ — ऩीसारेऩीसारेऩीसा

स्वयं जांच अभ्यास 1

3.1 राग शुद्ध सारंग का समप्रकृतिक राग कौन सा है?

(क) श्याम कल्याण

(ख) पूरिया धनाश्री

(ग) सारंग

(घ) हंसध्वनि

3.2 राग शुद्ध सारंग किन रागों का मिश्रण है?

(क) कल्याण तथा यमन

(ख) सारंग तथा कल्याण

(ग) सोहनी तथा पूरिया

(घ) पूरिया तथा मारवा

3.3. राग शुद्ध सारंग के आरोह में किस स्वर का प्रयोग नहीं होता है?

(क) मं

(ख) प़

(ग) ध

(घ) नी

3.4 राग शुद्ध सारंग की मुख्य स्वरसंगति कौन सी है?

(क) मगम

(ख) रे म प

(ग) साऩीसा

(घ) मरेमरेसा

3.5 राग शुद्ध सारंग का संवादी स्वर कौन सा है?

(क) प

(ख) नी

(ग) ग

(घ) सा

3.6 राग शुद्ध सारंग का वादी स्वर कौन सा है?

(क) मं

(ख) रे

(ग) ग

(घ) सा

3.7 राग शुद्ध सारंग को अधिकतर किस स्वर से आरम्भ किया जाता है?

(क) म॑

(ख) प़

(ग) ऩी

(घ) सा

3.4 सारांश

शुद्ध सारंग राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत गायन के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। यह राग सारंग अंग का एक राग है। सबसे पहले आलाप, उसके पश्चात विलंबित लय में बड़ा ख्याल तथा द्रुत लय में छोटे ख्याल को गाया जाता है। इन में तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें लयकारियों के साथ गाया जाता है। कल्याण थाट के इस राग की जाति औड़व-षाड़व है जिसका वादी स्वर ऋषभ तथा संवादी स्वर पंचम है। इसमें दोनों मध्यम व अन्य स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इसमें रे म रे की संगति सारंग अंग को प्रदर्शित करती है। इस राग को मंद्र सप्तक के निषाद से प्राय: आरम्भ किया जाता है। (ऩी सा $^{\text{म}}$रे म म, रे)। इस राग के आरोह में तीव्र मध्यम तथा अवरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है (ऩी सा $^{\text{म}}$रे म॑, म॑, प, म॑ प म रे सा)। इसका समप्रकृतिक राग श्याम कल्याण है।

3.5 शब्दावली

- विलंबित गत: उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में वादन के अंतर्गत विलंबित लय में बजाए जाने वाली गत।
- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।

- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।

- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।

3.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

3.1 (क)

3.2 (ख)

3.3 (ग)

3.4 (घ)

3.5 (क)

3.6 (ख)

3.7 (ग)

3.7 संदर्भ

मिश्रा, लालमणि. (1979). तंत्रीनाद. साहित्य रत्नालय, कानपुर।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2005). तांत्रिक विज्ञान, प्रतिभा स्पंदन प्रकाशन शिमला।

चौधरी, देबू. (1981). सितार और इसकी तकनीकें. एवन बुक कंपनी, दिल्ली।

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 2). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

3.8 अनुशंसित पठन

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 1). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

भीकन खान, यू.अनवर खान. (1972). सितार दर्पण. भारतीय संगीत नृत्य महाविद्यालय, बड़ौदा।

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 3). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

3.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग शुद्ध सारंग का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग शुद्ध सारंग के आलाप को लिखिए।

प्रश्न 3. राग शुद्ध सारंग की विलम्बित गत को तोड़ों सहित लिखिए।

प्रश्न 4 राग शुद्ध सारंग के आलाप को बजा कर सुनाइए।

प्रश्न 5. राग शुद्ध सारंग की विलम्बित गत को तोड़ों सहित बजा कर सुनाइए।

इकाई-4
राग शुद्ध सारंग - द्रुत गत

इकाई की रूपरेखा

4.1 भूमिका

4.2 उद्देश्य तथा परिणाम

4.3 शुद्ध सारंग राग का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़े

4.3.1 शुद्ध सारंग राग का परिचय

4.3.2 शुद्ध सारंग राग का आलाप

4.3.3 शुद्ध सारंग राग का द्रुत गत

4.3.4 शुद्ध सारंग राग की तोड़े

स्वयं जांच अभ्यास 1

4.4 सारांश

4.5 शब्दावली

4.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

4.7 संदर्भ

4.8 अनुशंसित पठन

4.9 पाठगत प्रश्न

4.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग शुद्ध सारंग का परिचय, आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग शुद्ध सारंग के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग शुद्ध सारंग का आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

4.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- शुद्ध सारंग राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- शुद्ध सारंग राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- शुद्ध सारंग राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- शुद्ध सारंग राग का परिचय, आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- शुद्ध सारंग राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।

- राग शुद्ध सारंग के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को क्रियात्मक रूप से प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

4.3 शुद्ध सारंग राग का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़े

4.3.1 शुद्ध सारंग राग का परिचय

राग - शुद्ध सारंग

थाट – कल्याण

जाति – औड़व-षाड़व

वादी – ऋषभ

संवादी - पंचम

स्वर – दानों मध्यम तथा अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – ऋषभ, पंचम, निषाद

समय - मध्याहन

समप्रकृतिक राग – श्याम कल्याण

आरोह:- ऩी सा, ^{म}रे, मं॑ प, नी सां।

अवरोह:- सां नी, ध प, मं॑ प, ^{म}रे म रे, ऩि सा।

पकड़:- ^{म}रे मं॑ प, म रे, सा ऩी ऽ, ध़, तथा प़ ऩि ध़, सा ऩि रे सा

मधुर व लोकप्रिय, शुद्ध सारंग राग का थाट कल्याण है। इस राग की जाति औड़व-षाड़व है। शुद्ध सारंग राग का वादी स्वर ऋषभ तथा संवादी स्वर पंचम है। प्रस्तुत राग में इसमें दोनों मध्यम व अन्य स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इस राग का

गायन समय मध्याहन काल माना जाता है। इस राग में ऋषभ, पंचम, निषाद पर न्यास किया जाता है। यह राग सारंग अंग का एक राग है। इसमें रे म रे की संगति सारंग अंग को प्रदर्शित करती है। इस राग को मंद्र सप्तक के निषाद से प्राय: आरम्भ किया जाता है। (ऩी सा मरे म म, रे)। इस राग के आरोह में तीव्र मध्यम तथा अवरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है (ऩी सा मरे मं, मं , प, मं प म रे सा)। कभी-कभी शुद्ध सारंग राग में दोनों मध्यम एक साथ भी प्रयुक्त होते हैं (सां नी ध प, मं प म म रे सा)। यह राग सारंग तथा कल्याण का मिश्रण है। पूर्वांग में सारंग तथा उत्तराग में कल्याण राग की छाया दिखाई देती है। अवरोह करते समय इस राग में मंद्र सप्तक के निषाद पर न्यास किया जाता है (रे म रे सा ऩि ऽ,)। स्वर संगति प़ ऩि ध़, सा ऩि रे सा इस राग की अपनी एक विशेष स्वर संगति है जो सारंग के अन्य प्रकारों में नहीं लगती। इसका समप्रकृतिक राग श्याम कल्याण है।

4.3.2 आलाप

- सा, ऩी ऩी सा रे म, रे ऩी सा, ऩी सा रे

  म म - रे म रे ऩी सा ऩी सा।

- सा ऩी ध़ प़, ऩी ध़ सा, ऩी रे, सा रे म रे,

  म रे ऩी ऩी सा रे - सा, सा सा

- सा ऽ म रे, ऩी सा म रे, म रे सा ऽऽ

  ऩी ध़ प़ ऩी सा म रे,

  रे मं प रे म रे ऩी सा रे मं प रे म

  रे प़ ऩी ध़ सा ऩी रे सा,

  म रे मं प ध मं प रे म रे,

  ऩी ध़ सा ऩी रे ऽ सा।

- ऩी सा रे मं प ऽऽ मं प प रे म रे मं मं ऽ ऽ मं प,

  मं प ध मं प, रे मं प ध ध प,

  ध प मं प रे म रे सा प म रे मं प मं

  प ऩी ध प म रे ऽ मं प,

  ऩी ध़ सा ऩी रे सा म रे

  प मं प नी ध प, रे मं

  प ध ध प ऽ ध ध प मं प,

  रे म रे ऩी सा रे मं प ध,

  मं प रे म रे म रे सा ऩी,

  ऩी ध़ सा ऩी रे सा, सा, सा

- मं प ऩी ऽ ऽ ऽ सा ऽ ऽ ऽ रें सां,

  रें नी सां, ऽ ऽ रें मं रें सां रें मं प ऽ ऽ

  मं रें रें नी सां, नी ध सां नी रे सां,

  सां नी ध प, रे मं प रे म रे

  सा ऩी ध़ सा ऩी रे सा, सा, सा ऽ

4.3.3 शुद्ध सारंग द्रुत गत तीन ताल

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
											म	रे	नि़	ऽनि़	सा
											दा	रा	दा	ऽर	दा
नि़	ऽ	ऽ	प़	नि़	ध़	सा	नि़	रे	ऽ	सा					
दा	ऽ	ऽ	रा	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ	रा					
											नि	सा	ैरे	ऽ	मं
											दा	रा	दा	ऽ	रा
प	ऽ	ऽ	प	मं	पप	मंमं	धध	पऽ	पमं	पऽ					
दा	ऽ	ऽ	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	रदा	दाऽ					
अन्तरा															
								रेऽ	ऽरे	रेऽ	मंऽ	ऽमं	मंऽ	प	नि
								दाऽ	ऽर	दाऽ	दाऽ	ऽर	दाऽ	दा	रा
सांऽ	ऽसां	सांऽ	सांऽ	नि	रेंरें	सां	ऽ								
दाऽ	ऽरा	दाऽ	राऽ	दा	दिर	दा	ऽ								
								नि	सांसां	रेंरें	मंमं	रेंऽ	रेसां	ऽसां	निऽ
								दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दाऽ
धऽ	धमं	ऽमं	पऽ	रे	मम	रे	सा	नि़	ऽ	ऽ					
दाऽ	रदा	ऽर	दाऽ	दा	दिर	दा	रा	दा	ऽ	ऽ					

4.3.4 शुद्ध सारंग राग के तोड़े

- प़प़ प़,प़ प़प़, प़प़,

  ऩीऩी ऩी,ऩी ऩीऩी, ऩीऩी,

  सासा सा,सा सासा, सासा,

  रेरे रे,रे रेरे, रेरे,

  मम म,म मम, मम,

  रेरे रे,रे रेरे, रेरे,

  मंमं मं,मं मंमं, मंमं,

  पप प,प पप, पप,

  मंमं मं,मं मंमं, मंमं,

  धध ध,ध धध, धध,

  पप प,प पप, पप,

  नीनी नी,नी नीनी, नीनी,

  सांसां सां,सां सांसां, सांसां,

  रेंरें रें,रें रेंरें, रेंरें,

  मंमं मं,मं मंमं, मंमं,

  रेंरें रें,रें रेंरें, रेंरें,

  मंमं मं,मं मंमं, मंमं,

रेंरें	रें,रें	रेंरें,	रेंरें,
सांसां	सां,सां	सांसां,	सांसां,
नीनी	नी,नी	नीनी,	नीनी,
धध	ध,ध	धध,	धध,
पप	प,प	पप,	पप,
मंमं	मं,मं	मंमं,	मंमं,
पप	प,प	पप,	पप,
मंमं	मं,मं	मंमं,	मंमं,
मम	म,म	मम,	मम,
रेरे	रे,रे	रेरे,	रेरे,
सासा	सा,सा	सासा,	सासा,
नीनी	नी,नी	नीनी,	नीनी,
सासा	सा,सा	सासा,	सासा,
रेम	रेसा	ऩीऽ	रेम
रेसा	ऩीऽ	रेम	रेसा

- पऱपऱ, पऱपऱ, ऩीऩीऩी, ऩीऩीऩी,
  सासासा, सासासा, रेरेरे, रेरेरे,
  ममम, ममम, रेरेरे, रेरेरे,

म॑म॑म॑,	म॑म॑म॑,	पपप,	पपप,
म॑म॑म॑,	म॑म॑म॑,	धधध,	धधध,
पपप,	पपप,	नीनीनी,	नीनीनी,
सांसांसां,	सांसांसां,	रेंरेंरें,	रेंरेंरें,
मंमंमं,	मंमंमं,	रेंरेंरें,	रेंरेंरें,
मंमंमं,	मंमंमं,	रेंरेंरें,	रेंरेंरें,
सांसांसां,	सांसांसां,	नीनीनी,	नीनीनी,
धधध,	धधध,	पपप,	पपप,
म॑म॑म॑,	म॑म॑म॑,	पपप,	पपप,
म॑म॑म॑,	म॑म॑म॑,	ममम,	ममम,
रेरेरे,	रेरेरे,	सासासा,	सासासा,
नीनीनी,	नीनीनी,	सासासा,	सासासा,
रेसाऩी	ऽऽरे	साऩीऽ	ऽरेसा

• प़प़,	प़प़,	ऩीऩी,	ऩीऩी,
सासा,	सासा,	रेरे,	रेरे,
मम,	मम,	रेरे,	रेरे,
म॑म॑,	म॑म॑,	पप,	पप,
म॑म॑,	म॑म॑,	धध,	धध,

पप,	पप,	नीनी,	नीनी,
सांसां,	सांसां,	रेंरें,	रेंरें,
मंमं,	मंमं,	रेंरें,	रेंरें,
मंमं,	मंमं,	रेंरें,	रेंरें,
सांसां,	सांसां,	नीनी,	नीनी,
धध,	धध,	पप,	पप,
म॑म॑,	म॑म॑,	पप,	पप,
म॑म॑,	म॑म॑,	मम,	मम,
रेंरे,	रेंरे,	सासा,	सासा,
नीनी,	नीनी,	सासा,	सासा,
रेसा	ऩीरे	साऩी	रेसा
ऩीसा	रेऩी	सारे	ऩीसा
नीसां	रेंनी	सारें	नीसां
मंमं	रेंमं	मरें	मंमं
मंमं	रेंसां	नीसां	रेंसां
रेंमं	रेंमं	रेंसां	नीसां
नीसां	नीनी	सांनी	नीसां
नीनी	धप	नीनी	धप

	म॑प	धम॑	पध	म॑प
	म॑म॑	म॑प	पप	नीनी
	धप	म॑प	धप	म॑प
	रेम	रेम	रेम	रेसा
	ऩीसा	रेम	रेसा	ऩीसा
	ऩीसा	रेऩी	सारे	ऩीसा
	ऩीऽ	ऽऽ	ऩीसा	रेऩी
	सारे	ऩीसा	ऩीऽ	ऽऽ
	ऩीसा	रेऩी	सारे	ऩीसा
•	मम	रेसा	ऩीसा	नीनी
	धप	म॑प	रेम	
	रेसा	ऩीऩी	सा-	सा-
•	नीनी	धप	धम॑	परे
	मरे	साऩी	सा-	
•	मम	रेसा	ऩीसा	रेसा
	रेम॑	परे	मप	
•	पप	म॑प	धप	म॑प
	रेसा	रेसा	ऩीसा	

• धध	पध	मंप	रेम
रेसा	ऩीसा		
• ऩीसा	रेम	पनी	सांसां
नीध	पमं	परे	
मरे	सासा	ऩीसा	
• ऩीसा	रेम	रेसा	ऩीसा
ऩीध़	प़ध़	मंप़	ऩीसा
रेमं	पम	रेसा	
• पप	मंप	धप	मंप
नीसां	नीरें	नीसां	नीप
मम	रेसा	ऩीसा	
• रेम	रेमं	पध	मंध
मंप	मरे	ऩीरे	ऩीसा
साऩी	पऩी	रेऩी	
• पनी	सांरें	नीसां	नीध
पनी	रेंरें	मंमं	रेंसां
• पसां	नीध	सांनी	रें-
मम	रेप	पमं	पप

- ऩीसा मम रेसा ऩीरे

  नीप धप पम

  रेसा ऩीसा रेम॑ पसां

  नीध पम॑ धप

- म॑ध म॑प मम रेप

  म॑प सां- नीरें

  मंमं रेंसां नीसां

- मम रेम मरे ऩीसा

  मंमं रेंमं मरें नीसां

  नीनी धप म॑प धप

  मम रेम रेसा ऩीसा

  ऽऽ नी़सा ऩीऽ ऩीसा

  ऩीऽ नी़सा ऩीऽ ऽऽ

  नी़सा ऩीऽ ऩीसा ऩीऽ

  नी़सा ऩीऽ ऽऽ नी़सा

  ऩीऽ ऩीसा ऩीऽ नी़सा

स्वयं जांच अभ्यास 1

4.1 राग शुद्ध सारंग का संवादी स्वर कौन सा है?

(क) प

(ख) नी

(ग) ग

(घ) सा

4.2 राग शुद्ध सारंग का वादी स्वर कौन सा है?

(क) म॑

(ख) रे

(ग) ग

(घ) सा

4.3 राग शुद्ध सारंग को अधिकतर किस स्वर से आरम्भ किया जाता है?

(क) मं॑

(ख) प़

(ग) ऩी

(घ) सा

4.4 राग शुद्ध सारंग की मुख्य स्वरसंगति कौन सी है?

(क) मगम

(ख) रे म प

(ग) साऩीसा

(घ) [मी]रेमरेसा

4.5 राग शुद्ध सारंग का समप्रकृतिक राग कौन सा है?

(क) श्याम कल्याण

(ख) पूरिया धनाश्री

(ग) सारंग

(घ) हंसध्वनि

4.6 राग शुद्ध सारंग किन रागों का मिश्रण है?

(क) कल्याण तथा यमन

(ख) सारंग तथा कल्याण

(ग) सोहनी तथा पूरिया

(घ) पूरिया तथा मारवा

4.7. राग शुद्ध सारंग के आरोह में किस स्वर का प्रयोग नहीं होता है?

(क) मं

(ख) प़

(ग) ध

(घ) नी

4.4 सारांश

शुद्ध सारंग राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत गायन के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। यह राग सारंग अंग का एक राग है। सबसे पहले आलाप, उसके पश्चात विलंबित लय में बड़ा ख्याल तथा द्रुत लय में छोटे ख्याल को गाया जाता है। इन में तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें लयकारियों के साथ गाया जाता है। कल्याण थाट के इस राग की जाति औड़व-षाड़व है जिसका वादी स्वर ऋषभ तथा संवादी स्वर पंचम है। इसमें दोनों मध्यम व अन्य स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं। इसमें रे म रे की संगति सारंग अंग को प्रदर्शित करती है। इस राग को मंद्र सप्तक के निषाद से प्राय: आरम्भ किया जाता है। (ऩी सा मरे म म, रे)। इस राग के आरोह में तीव्र मध्यम तथा अवरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है (ऩी सा मरे मं, मं, प, मं प म रे सा)। इसका समप्रकृतिक राग श्याम कल्याण है।

4.5 शब्दावली

- द्रुत गत: उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में वादन के अंतर्गत द्रुत लय में बजाए जाने वाली गत।
- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप से राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।

- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।

4.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

4.1 (क)

4.2 (ख)

4.3 (ग)

4.4 (घ)

4.5 (क)

4.6 (ख)

4.7 (ग)

4.7 संदर्भ

मिश्रा, लालमणि. (1979). तंत्रीनाद. साहित्य रत्नालय, कानपुर।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2005). तांत्रिक विज्ञान, प्रतिभा स्पंदन प्रकाशन शिमला।

चौधरी, देबू. (1981). सितार और इसकी तकनीकें. एवन बुक कंपनी, दिल्ली।

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 2). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

4.8 अनुशंसित पठन

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 1). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

भीकन खान, यू.अनवर खान. (1972). सितार दर्पण. भारतीय संगीत नृत्य महाविद्यालय, बड़ौदा।

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 3). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

4.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग शुद्ध सारंग का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग शुद्ध सारंग के आलाप को लिखिए।

प्रश्न 3. राग शुद्ध सारंग की द्रुत गत को तोड़ों सहित लिखिए।

प्रश्न 4 राग शुद्ध सारंग के आलाप को बजा कर सुनाइए।

प्रश्न 5. राग शुद्ध सारंग की द्रुत गत को तोड़ों सहित बजा कर सुनाइए।

इकाई-5
राग बिहाग - बड़ा ख्याल

इकाई की रूपरेखा

5.1 भूमिका

5.2 उद्देश्य तथा परिणाम

5.3 बिहाग राग का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल, तानें

5.3.1 बिहाग राग का परिचय

5.3.2 बिहाग राग का आलाप

5.3.3 बिहाग राग का बड़ा ख्याल

5.3.4 बिहाग राग की तानें

स्वयं जांच अभ्यास 1

5.4 सारांश

5.5 शब्दावली

5.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

5.7 संदर्भ

5.8 अनुशंसित पठन

5.9 पाठगत प्रश्न

5.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग बिहाग का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग बिहाग के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से बिहाग का आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को गा सकेंगे।

5.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- बिहाग राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- बिहाग राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- बिहाग राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को गाने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- बिहाग राग का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल, तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- बिहाग राग के आलाप, बड़ा ख्याल, तानों को गाने में सक्षम होंगे।

- राग बिहाग के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को क्रियात्मक रूप से प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

5.3 बिहाग राग का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल, तानें

5.3.1 बिहाग राग का परिचय

थाट – बिलावल

जाति - औडव-संपूर्ण

वादी - गंधार

संवादी - निषाद

स्वर - दोनों मध्यम, शेष स्वर शुद्ध

वर्जित - आरोह में रिषभ तथा धैवत

समय - रात्रि का दूसरा प्रहर

आरोह – नि़ सा ग, म प, नि सां

अवरोह - सां नि ध प, मं प ग म ग, रे सा

पकड़ - प, मं प ग म ग, रे सा

राग बिहाग बिलावल थाट का एक राग है। इसके आरोह में रिषभ तथा धैवत वर्जित हैं। इसकी जाति औडव संपूर्ण है। बिहाग का वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर निषाद है। इस राग में दोनों मध्यम प्रयुक्त होते हैंए इसका समय रात्रि का दूसरा प्रहर माना गया है। बिहाग का आरम्भ षड्ज की अपेक्षा मंद्र निषाद में किया जाता है तथा रिषभ आरोह में वर्जित रहता हैए जैसे. नि़ सा ग म। इसके आरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है। तीव्र मध्यम का प्रयोग अवरोह में केवल पंचम की सहायता से किया जाता है जैसे - सां नि ध प, मं प, ग म ग या मं प ग म ग। बिहाग के अवरोह में रिषभ

तथा धैवत स्वर अल्प हैं इसलिए अवरोह करते समय पहले गंधार तथा निषाद पर रूका जाता है। फिर रिषभ तथा धैवत का स्पर्ष करते हुए षड्ज तथा पंचम पर आते हैं, जैसे . सां नि, प, मं प ग म ग, सा। बिहाग में मं प ग म ग, रे सा अवरोह में किया जाता है। मं प करने के बाद ग म ग करते हुए गंधार पर रूकते हैं फिर रे सा करते हैं।

5.3.2 प्रारम्भिक आलाप

- नी़ ऩी स, सा, सा ऩी, सा ग, रे ऩी,

  सा ऩी, नी़ सा ऩी, सा, सा,

  सा ऩी ध़ प़, प़, प़ ऩी सा ग, रे सा, नी़ ऩी सा, सा,

- ऩी सा ग म ग, सा ग म म ग,

  ग, ग म प, प

- सा ग म प, मं प मं प ग म ग,

  रेसा, सा, ऩी ऩी सा

- ग म प नी ऽ ध प, ध मं प,

  मं प ग म ग, रे सा

- ग म प नी नी सां, सां, नी सां रें सां,

  नी सां गं मं मं गं, रें सां

  म म प नी नी सां रें सां, गं मं पं पं, मं पं गं मं गं, रेंसां

- सां नी ध प, प, मं प ग म ग,

  ग रेसा, ऩी ऩी सा सा

5.3.3 बिहाग बड़ा ख्याल विलम्बित लय 1/4 एक ताल

स्थायी

कैसे सुख सोवे निंदरिया श्याम मूरत चित चढ़ी।

अन्तरा

सोच सोच सदारंग औकलावे या विधि गाँठ परी।

स्थायी

				12			
				[रे]ग	[नी]सां (सा)	[ध]ऩि,	[ऩि]सां[सा]म
				कै	से ऽ	ऽ सु	ख
X							
1				2			
ग	-	-	-	सा	-	-	-
सो	ऽ	ऽ	ऽ	वे	ऽ	ऽ	ऽ
0							
3				4			
[सा]ऩि	-	ध़नि	प	ऩिसा(सा)	-	ऩि	-
नी	ऽ	द	रि	या	ऽ	ऽ	ऽ
2							
5				6			
ऩिसा	म	--	गमग	मग	प	-	मप
श्या	ऽ	ऽ	म	मुऽ	र	ऽ	त

0							
7				8			
पनि	-	-ध	-	पनिसां	(सां)	-	-
चि	ऽ	त	ऽ	च ऽ ऽ ऽ	ढ़ी	ऽ	ऽ
3							
9				10			
नि	-	प	मंप	ग	गमपध	गम	ग
ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽऽऽ	ऽऽ	ऽ
4							
11							
गम	-	ग	$^{\text{रे}}$सा				
ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ				
अन्तरा				**12**			
				मपऩिसां	सां	$^{\text{ध}}$नि	नि
				सो	चे	सो	चेऽ
X							
1				2			
रें	सां	-	धसां(सां)	नि	-	$^{\text{ध}}$प	-
स	दा	ऽ	रऽ	ग	ऽ	ऽ	ऽ

0							
3				4			
म	पप	ग	म	ग	-	मपधम	-
ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ओऽऽऽ	कु
2							
5				6			
ग	-	सा	-	रेसा	-	गम	ग
ला	ऽ	वे	ऽ	या	ऽ	वि	ध
0							
7				8			
मप	-	नि	धसां	पनिसारैं	(सां)	-	-
गाँ	ऽ	ठ	ऽ	प	ऽ	री	ऽ
3							
9				10			
नि	-	^{ध}प	-	मप	(प)	गम,रेग	गमपधम
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽऽऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
4							
11							
ग	-	$^{रे}$सा	-				
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ				

5.3.4 बिहाग की तानें

- मं॑पगम ग- मं॑प

  गमग- मं॑पगम

- गमपनी सांनीधप

  मं॑पगम गरेसा-

- गगरेसा ऩीऩीध़प़

  गंगंरेंसां नीनीधप

  मं॑पगम गरेसासा

  गमपग मपगम

- ऩीसागम पनीधप

  मपधप मं॑पगम

  गरेसासा ऩीसाऩीध़

  प़प़म़प़ म़प़ऩीसा

  रेसाऩीसा ऩीसागग

  रेसाऩीसा ऩीसागम

  गरेसासा ऩीसागम

  प-गम ग-ऩीसा

  गमप- गमग-

ऩीसागम	प-गम
• मंपगम	ग---
नीनीधप	मंपगम
ग---	सांनीधप
मपनीनी	धपमंप
गमग-	--गम
पनीसांरें	सांनीधप
मंपगम	गरेसासा
ऩीऩीसासा	गगमम
• प-ऩीसा	गगरेसा
ऩीसागम	पपमग
गमपप	नीनीधप
प-नीसां	गंगंरेंसां
गंगंरेंसां	नीणपप
मंपगम	गरेसा-
गमपनी	सां-गम
पनीसां-	गमपनी
• सांनीधप	मपनीनी

धपमप	गमरेसा
ऩीसागम	गमपसां
नी---	प-प-
गमपसां	नी---
प-प-	

- ऩीसागम रेसाऩीसा
  गमरेसा सासाऩीसा
  गमपम गमगरे
  सासाऩीसा गमपनी
  धपमप गमगरे
  सासागम पनीसांनी
  धपमप गमगरे
  सासाऩीसा ऩीसागम
- मंपगम ग-नीनी
  धपमंप गमग-
  सांनीधप मपनीनी
  धपमंप गमग-
  गमपनी सांनीधप

म॑पगम	गरेसा-
ऩीसागम	ग-ऩीसा
गमग-	ऩीसागम
● ऩीसागम	पनीसारें
सांनीधप	म॑पगम
गरेसासा	गमपनी
सांगेंरेंसां	नीधपप
म॑पगम	गरेसासा
● नी़सारे,ऩी	सारे,ऩीसा,
ऩीऩीध़प़	ऩीसारेसा
गमप,ग	मप,गम,
गमपध	म॑पगम
पनीसां,प	नीसां,पनी,
पनीसारें	सांनीरेंसां
गंगेंरेंसां	नीसारेंसां
नीनीधप	म॑पगम
गगरेसा	ऩीसागम
पमगम	ग---

----	ऩीसागम
पमगम	ग---
ऩीसागम	पमगम

स्वयं जांच अभ्यास 1

5.1 राग बिहाग का संवादी स्वर कौन सा है?

(क) नी

(ख) रे

(ग) ग

(घ) सा

5.2 राग बिहाग का वादी स्वर कौन सा है?

(क) मं

(ख) ग

(ग) म

(घ) सा

5.3 राग बिहाग को अधिकतर किस स्वर से आरम्भ किया जाता है?

(क) मं

(ख) प़

(ग) ऩी

(घ) सा

5.4 राग बिहाग की मुख्य स्वरसंगति कौन सी है?

(क) मगमप रे म रे सा

(ख) पमप मगरेसा

(ग) मप गमग

(घ) मं॑प गमग

5.5 राग बिहाग का समप्रकृतिक राग कौन सा है?

(क) मारू बिहाग

(ख) पूरिया

(ग) यमन

(घ) हंसध्वनि

5.6 राग बिहाग किन रागों का मिश्रण है?

(क) कल्याण तथा यमन

(ख) स्वतंत्र राग है

(ग) तीन रागों का मिश्रण है

(घ) पूरिया तथा मारू बिहाग

5.7. राग बिहाग के आरोह में किस स्वर का प्रयोग नहीं होता है?

(क) म

(ख) प

(ग) ध

(घ) नी

5.8. राग बिहाग के आरोह में किस स्वर का प्रयोग नहीं होता है?

(क) म

(ख) प

(ग) नी

(घ) रे

5.9. राग बिहाग में तीव्र मध्यम का प्रयोग किस स्वर के साथ किया जाता है?

(क) प

(ख) म

(ग) नी

(घ) ग

5.10. राग बिहाग का थाट क्या है?

(क) कल्याण

(ख) बिलावल

(ग) मारवा

(घ) बिहाग

5.4 सारांश

राग बिहाग, बिलावल थाट का एक राग है। इसके आरोह में रिषभ तथा धैवत वर्जित हैं। इसकी जाति औडव संपूर्ण है। बिहाग का वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर निषाद है। इस राग में दोनों मध्यम प्रयुक्त होते हैंए इसका समय रात्रि का दूसरा प्रहर माना गया है। बिहाग का आरम्भ षड्ज की अपेक्षा मंद्र निषाद में किया जाता है तथा रिषभ आरोह में वर्जित रहता हैए जैसे. नि़ सा ग म। इसके आरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है। तीव्र मध्यम का प्रयोग अवरोह में केवल पंचम की सहायता से किया जाता है जैसे - सां नि ध प, म॑प, ग म ग या म॑प ग म ग।

5.5 शब्दावली

- विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, तालबद्ध व लयबद्ध हो तथा विलंबित लय में गाई जाती हो उसे बड़ा ख्याल कहते हैं।

- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।

- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।

- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।

5.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

5.1 (क)

5.2 (ख)

5.3 (ग)

5.4 (घ)

5.5 (क)

5.6 (ख)

5.7 (ग)

5.8 (घ)

5.9 (क)

5.10 (ख)

5.7 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

5.8 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

5.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग बिहाग का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग बिहाग के आलाप को लिखिए।

प्रश्न 3. राग बिहाग में विलम्बित ख्याल को तानों सहित लिखिए।

प्रश्न 4 राग बिहाग के आलाप को गा कर सुनाइए।

प्रश्न 5. राग बिहाग के विलम्बित ख्याल को तानों सहित गा कर सुनाइए।

इकाई-6
राग बिहाग - छोटा ख्याल

इकाई की रूपरेखा

6.1 भूमिका

6.2 उद्देश्य तथा परिणाम

6.3 बिहाग राग का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, तानें

6.3.1 बिहाग राग का परिचय

6.3.2 बिहाग राग का आलाप

6.3.3 बिहाग राग का छोटा ख्याल

6.3.4 बिहाग राग की तानें

स्वयं जांच अभ्यास 1

6.4 सारांश

6.5 शब्दावली

6.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

6.7 संदर्भ

6.8 अनुशंसित पठन

6.9 पाठगत प्रश्न

6.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग बिहाग का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग बिहाग के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग बिहाग का आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गा सकेंगे।

6.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- बिहाग राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- बिहाग राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- बिहाग राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गाने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- बिहाग राग का परिचय, आलाप, छोटा, तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- बिहाग राग के आलाप, छोटा ख्याल, तानों को गाने में सक्षम होंगे।

- राग बिहाग के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को क्रियात्मक रूप से प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

6.3 बिहाग राग का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, तानें

6.3.1 बिहाग राग का परिचय

थाट – बिलावल

जाति - औडव-संपूर्ण

वादी - गंधार

संवादी - निषाद

स्वर - दोनों मध्यम, शेष स्वर शुद्ध

वर्जित - आरोह में रिषभ तथा धैवत

समय - रात्रि का दूसरा प्रहर

आरोह – नि़ सा ग, म प, नि सां

अवरोह - सां नि ध प, म॑प ग म ग, रे सा

पकड़ - प, म॑प ग म ग, रे सा

राग बिहाग बिलावल थाट का एक राग है। इसके आरोह में रिषभ तथा धैवत वर्जित हैं। इसकी जाति औडव संपूर्ण है। बिहाग का वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर निषाद है। इस राग में दोनों मध्यम प्रयुक्त होते हैंए इसका समय रात्रि का दूसरा प्रहर माना गया है। बिहाग का आरम्भ षड्ज की अपेक्षा मंद्र निषाद में किया जाता है तथा रिषभ आरोह में वर्जित रहता हैए जैसे. नि़ सा ग म। इसके आरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है। तीव्र मध्यम का प्रयोग अवरोह में केवल पंचम की सहायता से किया जाता है जैसे - सां नि ध प, म॑प, ग म ग या म॑प ग म ग। बिहाग के अवरोह में रिषभ

तथा धैवत स्वर अल्प हैं इसलिए अवरोह करते समय पहले गंधार तथा निषाद पर रूका जाता है। फिर रिषभ तथा धैवत का स्पर्ष करते हुए षड्ज तथा पंचम पर आते हैं, जैसे . सां नि, प, मं प ग म ग, सा। बिहाग में मं प ग म ग, रे सा अवरोह में किया जाता है। मं प करने के बाद ग म ग करते हुए गंधार पर रूकते हैं फिर रे सा करते हैं।

6.3.2 प्रारम्भिक आलाप

- नी़ ऩी स, सा, सा ऩी, सा ग, रे ऩी,

  सा ऩी, नी़ सा ऩी, सा, सा,

  सा ऩी ध़ प़, प़, प़ ऩी सा ग, रे सा, नी़ ऩी सा, सा,

- ऩी सा ग म ग, सा ग म म ग,

  ग, ग म प, प

- सा ग म प, मं प मं प ग म ग,

  रेसा, सा, ऩी ऩी सा

- ग म प नी ऽ ध प, ध मं प,

  मं प ग म ग, रे सा

- ग म प नी नी सां, सां, नी सां रें सां,

  नी सां गं मं मं गं, रें सां

  म म प नी नी सां रें सां, गं मं पं पं, मं पं गं मं गं, रेंसां

- सां नी ध प, प, मं प ग म ग,

  ग रेसा, ऩी ऩी सा सा

6.3.3 बिहाग का छोटा ख्याल

द्रुत लय तीन ताल

स्थाई

बालम रे मोरे मन के,

चिते होवन दे रे, होवन देरे मीत पियरवा।

अन्तरा

सदारंग जिन जावो, बिदेसवा सुख निंदरिया,

सोवन दे रे, सोवन दे रे मीत पियरवा।

x				**2**				**0**				**3**			
1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**	**11**	**12**	**13**	**14**	**15**	**16**
स्थाई															
												ग	म	प	सां
												बा	ऽ	ल	म
नि	-	प	-	-	-	(प)	प	ग	म	ग	-				
रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मो	रे	म	न	के	ऽ				
												^{प}नि	^{ध}नि	(प)	-
												चीं	ऽ	ते	ऽ
-	-	ग	म'	प	-	ग	म	ग	-	सा	-				
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	हो	ऽ	व	न	दे	ऽ	रे	ऽ				
												प़	-	नि़	नि़
												हो	ऽ	व	न
सा	-	^{म}ग	म	प	-	^{प}ग	म	ग	गरे	सा	-				
दे	ऽ	रे	ऽ	मी	ऽ	त	पि	य	रऽ	वा	ऽ				

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
अन्तरा															
												ग	ग	म	प
												स	दा	ऽ	रं
-	प	नि	नि	सां	-	सां	सां	सां	रें	सां	-				
ऽ	ग	जि	न	जा	ऽ	वो	बि	दे	स	वा	ऽ				
												सां	सां	(सां)	-
												सु	ख	नीं	ऽ
ध़नि	नि	(प)	-	प	-	नि	नि	सां	नि	(प)	-				
द	रि	या	ऽ	सो	ऽ	व	न	दे	ऽ	रे	ऽ				
												ग	म	प	नि
												सो	ऽ	व	न
सां	नि	प	-	प	म	ग	म	ग	ग	(सा)	-				
दे	ऽ	रे	ऽ	मी	ऽ	त	पि	य	र	वा	ऽ				

6.3.4 बिहाग राग की तानें

- मं॑प गम ग- मं॑प

  गम ग- मं॑प गम

- गम पनी सांनी धप

  मं॑प गम गरे सा-

- गग रेसा ऩीऩी ध़प़

  गंगं रेंसां नीनी धप

  मं॑प गम गरे सासा

  गम पग मप गम

- ऩीसा गम पनी धप

  मप धप मं॑प गम

  गरे सासा ऩीसा ऩीध़

  प़प़ म़प़ म़प़ ऩीसा

  रेसा ऩीसा ऩीसा गग

  रेसा ऩीसा ऩीसा गम

  गरे सासा ऩीसा गम

  प- गम ग- ऩीसा

  गम प- गम ग-

	ऩीसा	गम	प-	गम
•	म॑प	गम	ग-	--
	नीनी	धप	म॑प	गम
	ग-	--	सांनी	धप
	मप	नीनी	धप	म॑प
	गम	ग-	--	गम
	पनी	सांरें	सांनी	धप
	म॑प	गम	गरे	सासा
	ऩीऩी	सासा	गग	मम
•	प-	ऩीसा	गग	रेसा
	ऩीसा	गम	पप	मग
	गम	पप	नीनी	धप
	प-	नीसां	गंगं	रेंसां
	गंगं	रेंसां	नीण	पप
	म॑प	गम	गरे	सा-
	गम	पनी	सां-	गम
	पनी	सां-	गम	पनी
•	गम	पनी	सांनी	धप

मंप	गम	गरे	सा-
मंप	गम	ग-	मंप
गम	ग-	मंप	गम
मंप	गम	ग-	मंप
गम	ग-	मंप	गम
मंप	गम	ग-	मंप
गम	ग-	मंप	गम
मंप	गम	ग-	मंप
गम	ग-	मंप	गम

स्वयं जांच अभ्यास 1

6.1 राग बिहाग का समप्रकृतिक राग कौन सा है?

(क) मारू बिहाग

(ख) पूरिया

(ग) यमन

(घ) हंसध्वनि

6.2 राग बिहाग किन रागों का मिश्रण है?

(क) कल्याण तथा यमन

(ख) स्वतंत्र राग है

(ग) तीन रागों का मिश्रण है

(घ) पूरिया तथा मारू बिहाग

6.3. राग बिहाग के आरोह में किस स्वर का प्रयोग नहीं होता है?

(क) म

(ख) प

(ग) ध

(घ) नी

6.4. राग बिहाग के आरोह में किस स्वर का प्रयोग नहीं होता है?

(क) म

(ख) प

(ग) नी

(घ) रे

6.5 राग बिहाग का संवादी स्वर कौन सा है?

(क) नी

(ख) रे

(ग) ग

(घ) सा

6.6 राग बिहाग का वादी स्वर कौन सा है?

(क) मं

(ख) ग

(ग) म

(घ) सा

6.7 राग बिहाग को अधिकतर किस स्वर से आरम्भ किया जाता है?

(क) मं

(ख) प़

(ग) नी़

(घ) सा

6.8 राग बिहाग की मुख्य स्वरसंगति कौन सी है?

(क) मगमप रे म रे सा

(ख) पमप मगरेसा

(ग) मप गमग

(घ) मं॑प गमग

6.9. राग बिहाग में तीव्र मध्यम का प्रयोग किस स्वर के साथ किया जाता है?

(क) प

(ख) म

(ग) नी

(घ) ग

6.10. राग बिहाग का थाट क्या है?

(क) कल्याण

(ख) बिलावल

(ग) मारवा

(घ) बिहाग

6.4 सारांश

राग बिहाग, बिलावल थाट का एक राग है। इसके आरोह में रिषभ तथा धैवत वर्जित हैं। इसकी जाति औडव संपूर्ण है। बिहाग का वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर निषाद है। इस राग में दोनों मध्यम प्रयुक्त होते हैंए इसका समय रात्रि का दूसरा प्रहर माना गया है। बिहाग का आरम्भ षड्ज की अपेक्षा मंद्र निषाद में किया जाता है तथा रिषभ आरोह में वर्जित रहता हैए जैसे. नि॒ सा ग म। इसके आरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है। तीव्र मध्यम का प्रयोग अवरोह में केवल पंचम की सहायता से किया जाता है जैसे - सां नि ध प, मं॑प, ग म ग या मं॑प ग म ग।

6.5 शब्दावली

- छोटा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।
- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

6.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

6.1 (क)

6.2 (ख)

6.3 (ग)

6.4 (घ)

6.5 (क)

6.6 (ख)

6.7 (ग)

6.8 (घ)

6.9 (क)

6.10 (ख)

6.7 संदर्भ

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

6.8 अनुशंसित पठन

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1998). मधुर स्वरलिपि संग्रह. संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

6.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग बिहाग का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग बिहाग के आलाप को लिखिए।

प्रश्न 3. राग बिहाग में छोटा ख्याल को तानों सहित लिखिए।

प्रश्न 4 राग बिहाग के आलाप को गा कर सुनाइए।

प्रश्न 5. राग बिहाग के छोटा ख्याल को तानों सहित गा कर सुनाइए।

इकाई-7
राग बिहाग - विलंबित गत

इकाई की रूपरेखा

7.1 भूमिका

7.2 उद्देश्य तथा परिणाम

7.3 बिहाग राग का परिचय, आलाप, विलम्बित गत, तोड़े

7.3.1 बिहाग राग का परिचय

7.3.2 बिहाग राग का आलाप

7.3.3 बिहाग राग की विलम्बित गत

7.3.4 बिहाग राग की तोड़े

स्वयं जांच अभ्यास 1

7.4 सारांश

7.5 शब्दावली

7.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

7.7 संदर्भ

7.8 अनुशंसित पठन

7.9 पाठगत प्रश्न

7.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग बिहाग का परिचय, आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग बिहाग के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग बिहाग का आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

7.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- बिहाग राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- बिहाग राग के आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- बिहाग राग के आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- बिहाग राग का परिचय, आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- बिहाग राग के आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।

- राग बिहाग के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को क्रियात्मक रूप से प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

7.3 बिहाग राग का परिचय, आलाप, विलंबित गत, तोड़े

7.3.1 बिहाग राग का परिचय

थाट – बिलावल

जाति - औडव-संपूर्ण

वादी - गंधार

संवादी - निषाद

स्वर - दोनों मध्यम, शेष स्वर शुद्ध

वर्जित - आरोह में रिषभ तथा धैवत

समय - रात्रि का दूसरा प्रहर

आरोह – नि़ सा ग, म प, नि सां

अवरोह - सां नि ध प, म॑प ग म ग, रे सा

पकड़ - प, म॑प ग म ग, रे सा

राग बिहाग बिलावल थाट का एक राग है। इसके आरोह में रिषभ तथा धैवत वर्जित हैं। इसकी जाति औडव संपूर्ण है। बिहाग का वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर निषाद है। इस राग में दोनों मध्यम प्रयुक्त होते हैंए इसका समय रात्रि का दूसरा प्रहर माना गया है। बिहाग का आरम्भ षड्ज की अपेक्षा मंद्र निषाद में किया जाता है तथा रिषभ आरोह में वर्जित रहता हैए जैसे. नि़ सा ग म। इसके आरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है। तीव्र मध्यम का प्रयोग अवरोह में केवल पंचम की सहायता से किया जाता है जैसे - सां नि ध प, म॑प, ग म ग या म॑प ग म ग। बिहाग के अवरोह में रिषभ

तथा धैवत स्वर अल्प हैं इसलिए अवरोह करते समय पहले गंधार तथा निषाद पर रूका जाता है। फिर रिषभ तथा धैवत का स्पर्ष करते हुए षड्ज तथा पंचम पर आते हैं, जैसे . सां नि, प, मं प ग म ग, सा। बिहाग में मं प ग म ग, रे सा अवरोह में किया जाता है। मं प करने के बाद ग म ग करते हुए गंधार पर रूकते हैं फिर रे सा करते हैं।

7.3.2 प्रारम्भिक आलाप

- नी़ ऩी स, सा, सा ऩी, सा ग, रे ऩी,

  सा ऩी, नी़ सा ऩी, सा, सा,

- सा ऩी ध़ प़, प़, प़ ऩी सा ग,

  रे सा, नी़ ऩी सा, सा,

  ऩी सा ग म ग, सा ग म म ग, ग, ग म प, प

- सा ग म प, मं प मं प ग म ग,

  रेसा, सा, ऩी ऩी सा

- ग म प नी ऽ ध प, ध मं प,

  मं प ग म ग, रे सा

- ग म प नी नी सां, सां, नी सां रें सां,

  नी सां गं मं मं गं, रें सां

  म म प नी नी सां रें सां, गं मं पं पं, मं पं गं मं गं, रेंसां

- सां नी ध प, प, मं प ग म ग,

  ग रेसा, ऩी ऩी सा सा

7.3.3 बिहाग विलंबित गत तीन ताल

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
											गमपसां	नी	पप	मंप	-गम
											दिरदिर	दा	दिर	दिर	-दिर
ग	ग	रेसा	नीनी़	प़	नीनी़	सा	साम	गप	ग	रेसा					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	दिर	दिर	दा	रा					
अन्तरा															
											मम	ग	मम	प	नीनी
											दिर	दा	दिर	दा	दिर
सां	सां	सां	नीसां	गं	मंमं	गं	गं	रें	सां	सां					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					
											पनी	सां	गंमं	गं	रें
											दिर	दा	दिर	दा	रा
सां	नीध	प	सांसां	नी	धध	प	मंप	गम	ग	रेसा					
दा	दिर	दा	दिर	दा	दिर	दा	दिर	दिर	दा	रा					

7.3.4 बिहाग के तोड़े

- प-ऩीसा गगरेसा

  ऩीसागम पपमग

  गमपप नीनीधप

  प-नीसां गंगरेंसां

  गंगरेंसां नीणपप

  मंपगम गरेसा-

  गमपनी सां-गम

  पनीसां- गमपनी

- मंपगम ग- मंप

  गमग- मंपगम

- गमपनी सांनीधप

  मंपगम गरेसा-

- गगरेसा ऩीऩीधप़

  गंगरेंसां नीनीधप

  मंपगम गरेसासा

  गमपग मपगम

- ऩीसागम पनीधप

मपधप	म॑पगम
गरेसासा	ऩीसाऩीध़
प़प़म़प़	म़प़ऩीसा
रेसाऩीसा	ऩीसागग
रेसाऩीसा	ऩीसागम
गरेसासा	ऩीसागम
प-गम	ग-ऩीसा
गमप-	गमग-
ऩीसागम	प-गम
• म॑पगम	ग---
नीनीधप	म॑पगम
ग---	सांनीधप
मपनीनी	धपम॑प
गमग-	--गम
पनीसारें	सांनीधप
म॑पगम	गरेसासा
ऩीऩीसासा	गगमम
• सांनीधप	मपनीनी

धपमप गमरेसा

ऩीसागम गमपसां

नी--- प-प-

गमपसां नी---

प-प-

- ऩीसागम रेसाऩीसा

गमरेसा सासाऩीसा

गमपम गमगरे

सासाऩीसा गमपनी

धपमप गमगरे

सासागम पनीसांनी

धपमप गमगरे

सासाऩीसा ऩीसागम

- नी़सारे,ऩी सारे,ऩीसा,

ऩीऩीध़प़ ऩीसारेसा

गमप,ग मप,गम,

गमपध मपगम

पनीसां,प नीसां,पनी,

पनीसारें	सांनींरेंसां
गंगरेंसां	नीसारेंसां
नीनीधप	मंपगम
गगरेसा	ऩीसागम
पमगम	ग---
----	ऩीसागम
पमगम	ग---
ऩीसागम	पमगम
• मंपगम	ग-नीनी
धपमंप	गमग-
सांनीधप	मपनीनी
धपमंप	गमग-
गमपनी	सांनीधप
मंपगम	गरेसा-
ऩीसागम	ग-ऩीसा
गमग-	ऩीसागम
• ऩीसागम	पनीसारें
सांनीधप	मंपगम

गरेसासा गमपनी

सांगरेंसां नीधपप

मंपगम गरेसासा

- गमपनी सांनीधप

मंपगम गरेसा-

मंपगम ग- मंप

गमग- मंपगम

- मंपगम ग- मंप

गमग- मंपगम

मंपगम ग- मंप

गमग- मंपगम

मंपगम ग- मंप

गमग- मंपगम

स्वयं जांच अभ्यास 1

7.1 राग बिहाग में तीव्र मध्यम का प्रयोग किस स्वर के साथ किया जाता है?

(क) प

(ख) म

(ग) नी

(घ) ग

7.2 राग बिहाग का थाट क्या है?

(क) कल्याण

(ख) बिलावल

(ग) मारवा

(घ) बिहाग

7.3. राग बिहाग के आरोह में किस स्वर का प्रयोग नहीं होता है?

(क) म

(ख) प

(ग) ध

(घ) नी

7.4. राग बिहाग के आरोह में किस स्वर का प्रयोग नहीं होता है?

(क) म

(ख) प

(ग) नी

(घ) रे

7.5 राग बिहाग का संवादी स्वर कौन सा है?

(क) नी

(ख) रे

(ग) ग

(घ) सा

7.6 राग बिहाग का वादी स्वर कौन सा है?

(क) मं

(ख) ग

(ग) म

(घ) सा

7.7 राग बिहाग को अधिकतर किस स्वर से आरम्भ किया जाता है?

(क) मं

(ख) प़

(ग) नी़

(घ) सा

7.8 राग बिहाग की मुख्य स्वरसंगति कौन सी है?

(क) मगमप रे म रे सा

(ख) पमप मगरेसा

(ग) मप गमग

(घ) मंप गमग

7.9 राग बिहाग का समप्रकृतिक राग कौन सा है?

(क) मारू बिहाग

(ख) पूरिया

(ग) यमन

(घ) हंसध्वनि

7.10 राग बिहाग किन रागों का मिश्रण है?

(क) कल्याण तथा यमन

(ख) स्वतंत्र राग है

(ग) तीन रागों का मिश्रण है

(घ) पूरिया तथा मारू बिहाग

7.4 सारांश

राग बिहाग, बिलावल थाट का एक राग है। इसके आरोह में रिषभ तथा धैवत वर्जित हैं। इसकी जाति औडव संपूर्ण है। बिहाग का वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर निषाद है। इस राग में दोनों मध्यम प्रयुक्त होते हैंए इसका समय रात्रि का

दूसरा प्रहर माना गया है। बिहाग का आरम्भ षड्ज की अपेक्षा मंद्र निषाद में किया जाता है तथा रिषभ आरोह में वर्जित रहता हैए जैसे. नि़ सा ग म। इसके आरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है। तीव्र मध्यम का प्रयोग अवरोह में केवल पंचम की सहायता से किया जाता है जैसे - सां नि ध प, मं प, ग म ग या मं प ग म ग।

7.5 शब्दावली

- विलंबित गत: उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में वादन के अंतर्गत विलंबित लय में बजाए जाने वाली गत।
- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।

7.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

7.1 (क)

7.2 (ख)

7.3 (ग)

7.4 (घ)

7.5 (क)

7.6 (ख)

7.7 (ग)

7.8 (घ)

7.9 (क)

7.10 (ख)

7.7 संदर्भ

मिश्रा, लालमणि. (1979). तंत्रीनाद. साहित्य रत्नालय, कानपुर।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2005). तांत्रिक विज्ञान, प्रतिभा स्पंदन प्रकाशन शिमला।

चौधरी, देबू. (1981). सितार और इसकी तकनीकें. एवन बुक कंपनी, दिल्ली।

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 2). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

7.8 अनुशंसित पठन

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 1). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

भीकन खान, यू.अनवर खान. (1972). सितार दर्पण. भारतीय संगीत नृत्य महाविद्यालय, बड़ौदा।

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 3). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

7.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग बिहाग का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग बिहाग के आलाप को लिखिए।

प्रश्न 3. राग बिहाग की विलम्बित गत को तोड़ों सहित लिखिए

प्रश्न 4 राग बिहाग के आलाप को बजा कर सुनाइए।

प्रश्न 5. राग बिहाग की विलम्बित गत को तोड़ों सहित बजा कर सुनाइए।

इकाई-8

राग बिहाग - द्रुत गत

इकाई की रूपरेखा

8.1 भूमिका

8.2 उद्देश्य तथा परिणाम

8.3 बिहाग राग का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़े

8.3.1 बिहाग राग का परिचय

8.3.2 बिहाग राग का आलाप

8.3.3 बिहाग राग का द्रुत गत

8.3.4 बिहाग राग की तोड़े

स्वयं जांच अभ्यास 1

8.4 सारांश

8.5 शब्दावली

8.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

8.7 संदर्भ

8.8 अनुशंसित पठन

8.9 पाठगत प्रश्न

8.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग बिहाग का परिचय, आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग बिहाग के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग बिहाग का आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

8.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- बिहाग राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- बिहाग राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- बिहाग राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- बिहाग राग का परिचय, आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- बिहाग राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।

- राग बिहाग के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को क्रियात्मक रूप से प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

8.3 बिहाग राग का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़े

8.3.1 बिहाग राग का परिचय

थाट – बिलावल

जाति - औडव-संपूर्ण

वादी - गंधार

संवादी - निषाद

स्वर - दोनों मध्यम, शेष स्वर शुद्ध

वर्जित - आरोह में रिषभ तथा धैवत

समय - रात्रि का दूसरा प्रहर

आरोह – नि़ सा ग, म प, नि सां

अवरोह - सां नि ध प, मं प ग म ग, रे सा

पकड़ - प, मं प ग म ग, रे सा

राग बिहाग बिलावल थाट का एक राग है। इसके आरोह में रिषभ तथा धैवत वर्जित हैं। इसकी जाति औडव संपूर्ण है। बिहाग का वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर निषाद है। इस राग में दोनों मध्यम प्रयुक्त होते हैंए इसका समय रात्रि का दूसरा प्रहर माना गया है। बिहाग का आरम्भ षड्ज की अपेक्षा मंद्र निषाद में किया जाता है तथा रिषभ आरोह में वर्जित रहता हैए जैसे. नि़ सा ग म। इसके आरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है। तीव्र मध्यम का प्रयोग अवरोह में

केवल पंचम की सहायता से किया जाता है जैसे - सां नि ध प, म॑प, ग म ग या म॑प ग म ग। बिहाग के अवरोह में रिषभ तथा धैवत स्वर अल्प हैं इसलिए अवरोह करते समय पहले गंधार तथा निषाद पर रूका जाता है। फिर रिषभ तथा धैवत का स्पर्ष करते हुए षड्ज तथा पंचम पर आते हैं, जैसे . सां नि, प, म॑प ग म ग, सा। बिहाग में म॑प ग म ग, रे सा अवरोह में किया जाता है। म॑प करने के बाद ग म ग करते हुए गंधार पर रूकते हैं फिर रे सा करते हैं।

8.3.2 प्रारम्भिक आलाप

- नी़ ऩी स, सा, सा ऩी, सा ग, रे ऩी,

  सा ऩी, नी़ सा ऩी, सा, सा,

  सा ऩी ध़ प़, प़, प़ ऩी सा ग, रे सा, नी़ ऩी सा, सा,

- ऩी सा ग म ग, सा ग म म ग,

  ग, ग म प, प

- सा ग म प, म॑ प म॑ प ग म ग,

  रेसा, सा, ऩी ऩी सा

  ग म प नी ऽ ध प, ध म॑ प, म॑ प ग म ग, रे सा

- ग म प नी नी सां, सां, नी सां रें सां,

  नी सां गं मं मं गं, रें सां

  म म प नी नी सां रें सां, गं मं पं पं, म॑ पं गं मं गं, रेंसां

- सां नी ध प, प, म॑ प ग म ग,

  ग रेसा, ऩी ऩी सा सा

8.3.3 बिहाग द्रुत गत तीन ताल

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
						गग	मम	रेऽ	रेसा	ऽसा	नीऽ	सा	ध़	ऽ	नी़
						दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दाऽ	रा	दा	ऽ	रा
रे	ऽ	ऽ	सा	ऽ	सा										
दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	रा										
						गग	मम	पऽ	पग	ऽग	मऽ	प	धध	नी	ध
						दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दाऽ	दा	दिर	दा	रा
म	पप	ध	नी	रें	सां										
दा	दिर	दा	रा	दा	रा										
अन्तरा															
						गग	मम	ग	मम	पप	धध	नीऽ	नीध	ऽध	नीऽ
						दिर	दिर	दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दाऽ
रें	ऽ	ऽ	रें	सां	रेंरें	सां	सां								
दा	ऽ	ऽ	रा	दा	दिर	दा	रा								
								ध	नीनी	रें	सां	नी	धध	प	ध
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
पऽ	पग	ऽग	मऽ	रे	सा										
दाऽ	रदा	ऽर	दाऽ	दा	रा										

8.3.4 बिहाग के तोड़े

- मं॑प गम ग- --

  नीनी धप मं॑प गम

  ग- -- सांनी धप

  मप नीनी धप मं॑प

  गम ग- -- गम

  पनी सारे सांनी धप

  मं॑प गम गरे सासा

  ऩीऩी सासा गग मम

- गग रेसा ऩीऩी ध़प़

  गंगं रेंसां नीनी धप

  मं॑प गम गरे सासा

  गम पग मप गम

- ऩीसा गम पनी धप

  मप धप मं॑प गम

  गरे सासा ऩीसा ऩीध़

  प़प़ म़प़ म़प़ ऩीसा

  रेसा ऩीसा ऩीसा गग

रेसा ऩीसा ऩीसा गम

गरे सासा ऩीसा गम

प- गम ग- ऩीसा

गम प- गम ग-

ऩीसा गम प- गम

- मंप गम ग- मंप

  गम ग- मंप गम

- गम पनी सांनी धप

  मंप गम गरे सा-

- प- ऩीसा गग रेसा

  ऩीसा गम पप मग

  गम पप नीनी धप

  प- नीसां गंगं रेंसां

  गंगं रेंसां नीध पप

  मंप गम गरे सा-

  गम पनी सां- गम

  पनी सां- गम पनी

- गम पनी सांनी धप

मंप गम गरे सा-

मंप गम ग- मंप

गम ग- मंप गम

- मंप गम ग- मंप

गम ग- मंप गम

मंप गम ग- मंप

गम ग- मंप गम

मंप गम ग- मंप

गम ग- मंप गम

स्वयं जांच अभ्यास 1

8.1 राग बिहाग का समप्रकृतिक राग कौन सा है?

(क) मारू बिहाग

(ख) पूरिया

(ग) यमन

(घ) हंसध्वनि

8.2 राग बिहाग किन रागों का मिश्रण है?

(क) कल्याण तथा यमन

(ख) स्वतंत्र राग है

(ग) तीन रागों का मिश्रण है

(घ) पूरिया तथा मारू बिहाग

8.3. राग बिहाग के आरोह में किस स्वर का प्रयोग नहीं होता है?

(क) म

(ख) प

(ग) ध

(घ) नी

8.4. राग बिहाग के आरोह में किस स्वर का प्रयोग नहीं होता है?

(क) म

(ख) प

(ग) नी

(घ) रे

8.5 राग बिहाग का संवादी स्वर कौन सा है?

(क) नी

(ख) रे

(ग) ग

(घ) सा

8.6 राग बिहाग का वादी स्वर कौन सा है?

(क) मं

(ख) ग

(ग) म

(घ) सा

8.7 राग बिहाग को अधिकतर किस स्वर से आरम्भ किया जाता है?

(क) मं

(ख) प़

(ग) नी़

(घ) सा

8.8 राग बिहाग की मुख्य स्वरसंगति कौन सी है?

(क) मगमप रे म रे सा

(ख) पमप मगरेसा

(ग) मप गमग

(घ) मं॑प गमग

8.9. राग बिहाग में तीव्र मध्यम का प्रयोग किस स्वर के साथ किया जाता है?

(क) प

(ख) म

(ग) नी

(घ) ग

8.10. राग बिहाग का थाट क्या है?

(क) कल्याण

(ख) बिलावल

(ग) मारवा

(घ) बिहाग

8.4 सारांश

राग बिहाग, बिलावल थाट का एक राग है। इसके आरोह में रिषभ तथा धैवत वर्जित हैं। इसकी जाति औडव संपूर्ण है। बिहाग का वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर निषाद है। इस राग में दोनों मध्यम प्रयुक्त होते हैंए इसका समय रात्रि का दूसरा प्रहर माना गया है। बिहाग का आरम्भ षड्ज की अपेक्षा मंद्र निषाद में किया जाता है तथा रिषभ आरोह में वर्जित रहता हैए जैसे. नि॒ सा ग म। इसके आरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है। तीव्र मध्यम का प्रयोग अवरोह में केवल पंचम की सहायता से किया जाता है जैसे - सां नि ध प, मं॑प, ग म ग या मं॑प ग म ग।

8.5 शब्दावली

- द्रुत गत: उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में वादन के अंतर्गत द्रुत लय में बजाए जाने वाली गत।
- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।

8.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

8.1 (क)

8.2 (ख)

8.3 (ग)

8.4 (घ)

8.5 (क)

8.6 (ख)

8.7 (ग)

8.8 (घ)

8.9 (क)

8.10 (ख)

8.7 संदर्भ

मिश्रा, लालमणि. (1979). तंत्रीनाद. साहित्य रत्नालय, कानपुर।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2005). तांत्रिक विज्ञान, प्रतिभा स्पंदन प्रकाशन शिमला।

चौधरी, देबू. (1981). सितार और इसकी तकनीकें. एवन बुक कंपनी, दिल्ली।

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 2). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

मृत्युंजय, डॉ. शर्मा. (2000). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

8.8 अनुशंसित पठन

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 1). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

भीकन खान, यू.अनवर खान. (1972). सितार दर्पण. भारतीय संगीत नृत्य महाविद्यालय, बड़ौदा।

बंधोपाध्याय, श्रीपद. (1977). सितार मार्ग (भाग 3). भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

8.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग बिहाग का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग बिहाग के आलाप को लिखिए।

प्रश्न 3. राग बिहाग की द्रुत गत को तोड़ों सहित लिखिए

प्रश्न 4 राग बिहाग के आलाप को बजा कर सुनाइए।

प्रश्न 5. राग बिहाग की द्रुत गत को तोड़ों सहित बजा कर सुनाइए।

इकाई-9
राग बागेश्री - विलंबित गत (वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
9.1	भूमिका
9.2	उद्देश्य तथा परिणाम
9.3	राग बागेश्री (वादन के संदर्भ में)
9.3.1	बागेश्री राग का परिचय (वादन के संदर्भ में)
9.3.2	बागेश्री राग का आलाप (वादन के संदर्भ में)
9.3.3	बागेश्री राग की विलम्बित गत
9.3.4	बागेश्री राग की विलम्बित गत के तोड़े
	स्वयं जांच अभ्यास 1
9.4	सारांश
9.5	शब्दावली
9.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
9.7	संदर्भ
9.8	अनुशंसित पठन
9.99	पाठगत प्रश्न

9.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग बागेश्री का परिचय, आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग बागेश्री के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग बागेश्री का आलाप, विलंबित गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

9.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- बागेश्री राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- बागेश्री राग के आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- बागेश्री राग के आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- बागेश्री राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी परिचित हो जाएगा
- बागेश्री राग के आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- बागेश्री राग के आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।

- राग बागेश्री के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

9.3 राग बागेश्री (वादन के संदर्भ में)

9.3.1 बागेश्री राग का परिचय

राग - बागेश्री

थाट - काफ़ी

जाति - औडव संपूर्ण

वादी - मध्यम

संवादी - षड्ज

स्वर - गंधार तथा निषाद कोमल (ग़ नि़)

वर्जित - आरोह में रिषभ तथा पंचम

समय - रात्रि का तीसरा प्रहर

समप्रकृतिक राग - रागेश्री

आरोह – ऩी सा ग़ म ध नि़ सां

अवरोह - सां नि़ ध, म प ध ग़, म ग़ रे सा

पकड़ - सां नि़ ध म प ध ग़, रे सा

बागेश्री राग काफी थाट का एक राग है। इसकी जाति औडव-संपूर्ण मानी जाती है। वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। इस राग में गंधार तथा निषाद कोमल प्रयुक्त होते हैं। बागेश्री राग के आरोह में रिषभ तथा पंचम वर्जित रहते हैं।

इसका समय रात्रि का तीसरा प्रहर माना जाता है। बागेश्री एक अत्यन्त मधुर राग है। इस राग का उपयोग कर विद्वानों ने कई मधुर सांगीतिक रचनाएं की हैं।

आरोह करते समय रिषभ वर्जित रहता है अतः प्रारम्भ में नी सा ग म ध, नी सा ग म आदि किया जाता है। इस राग में षड्ज से सीधे मध्यम पर भी आते हैं। जैसे-नी सा म ग रे सा। षड्ज से मध्यम पर आना इस राग की अपनी विशेषता है। बागेश्री राग में पंचम का अल्प प्रयोग होता है। राग का अवरोह करते समय पंचम का प्रयोग केवल एक विशेष ढंग से किया जाता है, जैसे सां नी ध, म प ध ऽ ग, म ग रे सा। पंचम का सीधा प्रयोग राग में नहीं किया जाता है, जैसे सां नी ध प म आदि।

इस राग का प्रमुख स्वर समुदाय ध़ नी सा म, ग म ध नी ध तथा म प ध ग ऽ है। इन्हीं के आधार पर आलाप तान आदि की रचनाएं की जाती हैं। इस राग में ध ग की संगति प्रयुक्त होती है, जैसे- म प ध ग, रे सा। बाग्रश्री राग का आरम्भ (आलाप) सा नी ध़ नी सा म या ध़ नी सा म करते हुए ही करना चाहिए।

इसका समप्रकृतिक राग रागेश्री है। दोनों में अंतर यह है कि बागेश्री में पंचम का प्रयोग किया जाता है वही रागेश्री में पंचम वर्जित रहता है। बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग है वहीं दूसरी ओर रागेश्री में गंधार शुद्ध है जैसे- बागेश्री - नी सा म ग, म ध नी ध, म प ध ग, म ग रे सा। रागेश्री – नी सा ग म, ग म ध नी ध म, ग म रे सा।

9.3.2 आलाप

- सा, नी सा, सा, नी ध़ - सा रे सा,
- ध़ नी नी ध़ नी सा, सा नी ध़ म़ -,
- म़ ध़ नी नी सा, सा,
- ध़ नी सा म ग – म ग रे सा

- सा <u>नी़</u> ध़ <u>नी़</u> ध़ -, म़ म़ ध़,

  म़ ध़ <u>नी़</u> <u>नी़</u> सा, सा

- ध़ <u>नी़</u> सा म -, <u>ग</u> म <u>ग</u> रे सा,

  <u>ग</u> म <u>ग</u> – <u>ग</u> म ध – म <u>ग</u>, म <u>ग</u> रे सा

- म <u>ग</u> ध, ध म – ध <u>नी</u> ध म,

  म ध <u>नी</u> <u>नी</u> सां, सां

- सां – <u>गं</u> <u>गं</u> रें सां -, ध <u>नी</u> <u>नी</u> सां,

  मं <u>गं</u> रें सां सां, सां नी सां ऽ ऽ

- सां <u>नी</u> ध <u>नी</u> ध – म प ध <u>ग</u> – म <u>ग</u> रे सा,

  ध़ <u>नी़</u> <u>नी़</u> सा म <u>ग</u> रे सा, सा

9.3.3 बागेश्री विलंबित गत तीन ताल

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16

स्थाई

											गम	ग	रेरे	सा	ध़नी
											दिर	दा	दिर	दा	दिर
सा	सा	सा	गम	ध	मम	नी	ध	म	गरे	सा					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					

अन्तरा

											मम	ग	मम	ध	नीनी
											दिर	दा	दिर	दा	दिर
सां	सां	सां	सांसां	नी	सांसां	रें	सां	ध	नीनी	ध					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	रा					

											गंगं	मं	गरें	सां	नीसां
											दिर	दा	दिर	दा	दिर
रें	सां	सां	धनी	ध	मम	प	ध	ग	रेरे	सा					
दा	दिर	दा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा					

9.3.4 बागेश्री राग के तोड़े

- सम से सम तक

साऽसा नीऽनी	गऽग मऽम
धऽधनीऽनी	सांऽसांगंऽगं
मंऽमंगंऽगं	रेंऽरेंसांऽसां
नीऽऽनीधऽऽध	नीऽऽनीधऽऽध
मऽऽमधऽऽध	गऽऽगमऽऽम
गऽऽगरेऽऽरे	साऽऽसानीऽऽनी
ध़ऽऽध़मऽऽम़	ध़ऽऽध़नीऽऽनी
साऽऽऽनीऽऽनी	साऽऽऽनीऽऽनी

- 12वीं मात्रा से सम तक

ध़नीसानी	सा---
ध़नीसानी	सा---
ध़नीसानी	

- पाँचवीं मात्रा से गत तक

सानीधनी	रेसानीसा
मगरेसा	धमगम
नीधसांनी	धमगम

गरेसा-

- सम से सम तक

मगरेसा	गरेसाऩी
रेसाऩीध़	साऩीध़नी़
सासाऩीसा	गगसाग
ममगम	धधमध
नीनीधनी	सांसांनीसां
गंगरेंसां	नीधसांनी
धनीधम	गमधनी
सांनीधम	धमगरे

- सम से गत तक

साऩीध़ऩी	रेसाऩीध़
मगरेसा	धमगम
नीधनीध	सांनीसांनी
रेंसारेंसां	नीधनीध
सासाधनी	धमगम
गरेसा-	

- सम से सम तक

ऩीसागग	सागमम
गमधध	मधनीनी
धनीसांसां	नीसांगंगं
रेंसांनीसां	धनीधम
मगरेसा	मगरेसा
ऩीसाध़ऩी	सा-मग
रेसाऩीसा	ध़ऩीसा-
मगरेसा	ऩीसाध़ऩी

- सम से सम तक

ऩीऩीऩी	सासासा
गगग	ममम
धधध	नीनीनी
सांसांसां	गंगंगं
मंमंमं	गंगंग
रेंरेंरें	सांसांसां
नीनीनी	धधध
नीनीनी	धधध
ममम	धधध

गगग	ममम
गगग	रेरेरे
सासासा	ऩीऩीनी़
ध़ध़ध़	म़म़म़
ध़ध़ध़	ऩीनी़नी़
सासासा	ऩीनी़नी़
सासासा	ऩीनी़नी़

- सम से सम तक

ऩीऩीऩीऩी	सासासासा
गगगग	मममम
धधधध	नीनीनीनी
सांसांसांसां	गंगंगंगं
मंमंमंमं	गंगंगंगं
रेंरेंरेंरें	सांसांसांसां
नीनीनीनी	धधधध
नीनीनीनी	धधधध
मममम	धधधध
गगगग	मममम

गगगग	रेरेरेरे
सासासासा	ऩीऩीऩीऩी
ध़ध़ध़ध़	म़म़म़म़
ध़ध़ध़ध़	ऩीऩीऩीऩी
सासासासा	ऩीऩीऩीऩी
सासासासा	ऩीऩीऩीऩी

- सम से सम तक

सासासासाऩीऩीऩीऩी	गगगगममम
धधधधनीनीनीनी	सांसांसांसांगंगंगंगं
मंमंमंमंगंगंगंगं	रेंरेंरेंरेंसांसांसांसां
नीनीनीनीधधधध	नीनीनीनीधधधध
मममधधधध	गगगगममम
गगगगरेरेरेरे	सासासासाऩीऩीऩीऩी
ध़ध़ध़ध़म़म़म़म़	ध़ध़ध़ध़ऩीऩीऩीऩी
साऽऽऽऩीऩीऩीऩी	साऽऽऽऩीऩीऩीऩी

- खाली से सम तक

ध़ध़ध़ऩीऩीनी	सासासाऩीऩीऩी
सासासागगग	रेरेरेसासासा

ऩीऩीऩीसासासा	गगगममम
धधधनीनीनी	सांसांसांगंगंगं
मंमंमंगंगंगं	रेंरेंरेंसांसांसां
नीनीनीधधध	नीनीनीधधध
मममधधध	गगगममम
गगगरेंरेंरे	सासासाऩीऩीऩी
ध़ध़ध़मम़म़	ध़ध़ध़ऩीऩीऩी
गगगरेंरेंरे	ऩीनी़ीसासासा
ऩीऽऽऩीऽऽ	साऽऽऩीऽऽ
ऩीऽऽसाऽऽ	ऩीऽऽऩीऽऽ
ऽऩीऩीऩी	ऽसासासा
ऽगगग	ऽममम
ऽधधध	ऽनीनीनी
ऽसांसांसां	ऽरेंरेंरें
ऽनीनीनी	ऽधधध
ऽनीनीनी	ऽधधध
ऽममम	ऽधधध
ऽगगग	ऽममम

ऽगगग	ऽरेरेरे
ऽसासासा	ऽऩीऩीनी
ऽध़ध़ध़	ऽम़म़म़
ऽध़ध़ध़	ऽऩीनीनी
ऽसासासा	ऽऩीनीनी
ऽसासासा	ऽऩीनीनी

स्वयं जांच अभ्यास 1

9.1 बागेश्री राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) म

ख) नि

ग) नी

घ) ग

9.2 बागेश्री राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) सा

ग) प

घ) म

9.3 बागेश्री राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) रात्रि का तीसरा प्रहर

घ) दोपहर

9.4 बागेश्री राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) कोई भी नहीं

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) गंधार

9.5 बागेश्री राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) रे

ख) ग

ग) म

घ) नी

9.6 बागेश्री राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) काफी

ग) भैरवी

घ) तोड़ी

9.7 बागेश्री राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध नि ध प, म ग

ख) ध सां नि ध प, म ग

ग) नि ध म प ध ग

घ) ध नि सां नी ध म ग

9.8 बागेश्री राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 9

ख) 16

ग) 2

घ) 1

9.9 बागेश्री राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।

क) नहीं

ख) हां

9.10 बागेश्री राग, काफी तथा श्री रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

9.11 बागेश्री राग का समप्रकृतिक राग निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) काफी

ग) रागेश्री

घ) श्री

9.12 बागेश्री राग की जाति निम्न में से कौन सी है?

क) संपूर्ण संपूर्ण

ख) षाड़व संपूर्ण

ग) संपूर्ण औडव

घ) औडव संपूर्ण

9.13 निम्न में से कौन सा कथन ठीक है?

क) रागेश्री में गंधार शुद्ध तथा बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग होता है।

ख) रागेश्री में गंधार शुद्ध तथा बागेश्री में शुद्ध गंधार का प्रयोग होता है।

ग) रागेश्री में गंधार कोमल तथा बागेश्री में शुद्ध गंधार का प्रयोग होता है।

घ) रागेश्री में गंधार कोमल तथा बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग होता है।

9.14 निम्न में से कौन सा कथन ठीक है?

क) बागेश्री में म रे की संगति प्रमुखता से लगती है।

ख) बागेश्री में ध ग़ की संगति प्रमुखता से लगती है।

ग) बागेश्री में म रे ग़ की संगति प्रमुखता से लगती है।

घ) बागेश्री में म प ध ग की संगति प्रमुखता से लगती है।

9.15 निम्न में से कौन सा कथन ठीक है?

क) बागेश्री राग में गंधार का अल्प प्रयोग होता है।

ख) बागेश्री राग में पंचम का अल्प प्रयोग नहीं होता है।

ग) बागेश्री राग में पंचम का अल्प प्रयोग होता है।

घ) बागेश्री राग में धैवत का अल्प प्रयोग आरोह में होता है।

9.4 सारांश

बागेश्री राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रचलित राग है। बागेश्री राग काफी थाट जन्य तथा औडव-संपूर्ण जाति का माना जाता है। वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। इस राग में गंधार तथा निषाद कोमल प्रयुक्त होते हैं। बागेश्री राग के आरोह में रिषभ तथा पंचम वर्जित रहते हैं। इसका समय रात्रि का तीसरा प्रहर माना जाता है। बागेश्री एक अत्यन्त मधुर राग है। इस राग का उपयोग कर विद्वानों ने कई मधुर सांगीतिक रचनाएं की हैं। आरोह करते समय रिषभ वर्जित रहता है अतः प्रारम्भ में ऩी सा ग़ म ध, ऩी सा ग़ म आदि किया जाता है। इस राग में षड्ज से सीधे मध्यम पर भी आते हैं। बागेश्री राग में पंचम का अल्प प्रयोग होता है। इस राग में विलंबित गत को धीमी लय में बजाया जाता है। विलंबित गत में तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार के तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

9.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- विलंबित गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर-रचना जो लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में बजाई जाती हो उसे विलंबित गत कहते हैं।

- मसीतखानी गत: वादन के अंतर्गत, जराग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो, विलंबित लय में बजाई जाती हो तथा जिसके बोल निश्चित हों (दिर दा दिर दा रा दा दा रा), उसे मसीतखानी गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, वाद्य पर बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।
- लय: वादन/आायन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

9.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

9.1 उत्तर: क)

9.2 उत्तर: ख)

9.3 उत्तर: ग)

9.4 उत्तर: घ)

9.5 उत्तर: क)

9.6 उत्तर: ख)

9.7 उत्तर: ग)

9.8 उत्तर: घ)

9.9 उत्तर: क)

9.10 उत्तर: ख)

9.11 उत्तर: ग)

9.12 उत्तर: घ)

9.13 उत्तर: क)

9.14 उत्तर: ख)

9.15 उत्तर: ग)

9.7 संदर्भ

डॉ. केशव शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, मार्च 2024।

डॉ. निर्मल सिंह से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, अप्रैल 2024।

बन्द्योपाध्याय, श्रीपद. (1957). सितार मार्ग (भाग 1-4), भारतीय संगीत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

9.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

9.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग बागेश्री का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग बागेश्री के तीन आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग बागेश्री की विलंबित गत लिखिए।

प्रश्न 4. राग बागेश्री की विलंबित गत के पांच तोड़े लिखिए।

इकाई-10
राग बागेश्री की द्रुत गत

इकाई की रूपरेखा

क्रम		विवरण
10.1		भूमिका
10.2		उद्देश्य तथा परिणाम
10.3		राग बागेश्री
	10.3.1	बागेश्री राग का परिचय
	10.3.2	बागेश्री राग का आलाप
	10.3.3	बागेश्री राग की द्रुत गत
	10.3.4	बागेश्री राग की द्रुत गत के तोड़े
		स्वयं जांच अभ्यास 1
10.4		सारांश
10.5		शब्दावली
10.6		स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
10.7		संदर्भ
10.8		अनुशंसित पठन
10.9		पाठगत प्रश्न

10.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग बागेश्री का परिचय, आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग बागेश्री के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग बागेश्री का आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

10.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- बागेश्री राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- बागेश्री राग के आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- बागेश्री राग के आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- बागेश्री राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- बागेश्री राग के आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- बागेश्री राग के आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।

- राग बागेश्री के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

10.3 राग बागेश्री (वादन के संदर्भ में)

10.3.1 बागेश्री राग का परिचय

राग - बागेश्री

थाट - काफ़ी

जाति - औडव संपूर्ण

वादी - मध्यम

संवादी - षड्ज

स्वर - गंधार तथा निषाद कोमल (ग़ नि़)

वर्जित - आरोह में रिषभ तथा पंचम

समय - रात्रि का तीसरा प्रहर

समप्रकृतिक राग - रागेश्री

आरोह – ऩी सा ग़ म ध नि़ सां

अवरोह - सां नि़ ध, म प ध ग़, म ग़ रे सा

पकड़ - सां नि़ ध म प ध ग़, रे सा

बागेश्री राग काफी थाट का एक राग है। इसकी जाति औडव-संपूर्ण मानी जाती है। वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। इस राग में गंधार तथा निषाद कोमल प्रयुक्त होते हैं। बागेश्री राग के आरोह में रिषभ तथा पंचम वर्जित रहते हैं। इसका समय रात्रि का तीसरा प्रहर माना जाता है। बागेश्री एक अत्यन्त मधुर राग है।

इस राग का उपयोग कर विद्वानों ने कई मधुर सांगीतिक रचनाएं की हैं। आरोह करते समय रिषभ वर्जित रहता है अतः प्रारम्भ में ऩी सा ग म ध, ऩी सा ग म आदि किया जाता है। इस राग में षड्ज से सीधे मध्यम पर भी आते हैं। जैसे-ऩी सा म ग रे सा। षड्ज से मध्यम पर आना इस राग की अपनी विशेषता है। बागेश्री राग में पंचम का अल्प प्रयोग होता है।

राग का अवरोह करते समय पंचम का प्रयोग केवल एक विशेष ढंग से किया जाता है, जैसे सां नी ध, म प ध ऽ ग, म ग रे सा। पंचम का सीधा प्रयोग राग में नहीं किया जाता है, जैसे सां नी ध प म आदि।

इस राग का प्रमुख स्वर समुदाय ध़ ऩी सा म, ग म ध नी ध तथा म प ध ग ऽ है। इन्हीं के आधार पर आलाप तान आदि की रचनाएं की जाती हैं। इस राग में ध ग की संगति प्रयुक्त होती है, जैसे- म प ध ग, रे सा। बाग्रश्री राग का आरम्भ (आलाप) सा ऩी ध़ ऩी सा म या ध़ ऩी सा म करते हुए ही करना चाहिए।

इसका समप्रकृतिक राग रागेश्री है। दोनों में अंतर यह है कि बागेश्री में पंचम का प्रयोग किया जाता है वही रागेश्री में पंचम वर्जित रहता है। बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग है वहीं दूसरी ओर रागेश्री में गंधार शुद्ध है जैसे- बागेश्री - ऩी सा म ग, म ध नी ध, म प ध ग, म ग रे सा। रागेश्री – ऩी सा ग म, ग म ध नी ध म, ग म रे सा।

10.3.2 आलाप

- सा, नी सा, सा, ऩी ध़ - सा रे सा,
- ध़ ऩी ऩी ध़ ऩी सा, सा ऩी ध़ म़ -,

  म़ ध़ ऩी ऩी सा, सा,
- ध़ ऩी सा म ग – म ग रे सा

- सा ऩी ध़ ऩी ध़ -, म़ म़ ध़,

  म़ ध़ ऩी ऩी सा, सा

- ध़ ऩी सा म -, ग़ म ग़ रे सा,

  ग़ म ग़ – ग़

  म ध – म ग़, म ग़ रे सा

- म ग़ ध, ध म – ध नी ध म,

  म ध नी नी सां, सां

- सां – गं गं रें सां -, ध नी नी सां,

  मं गं रें सां सां, सां सां

- सां नी ध नी ध – म प ध

  ग़ – म ग़ रे सा,

  ध़ ऩी ऩी सा म ग़ रे सा, सा

10.3.2 बागेश्री द्रुत गत तीन ताल

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
												सां	नीनी	ध	नी
												दा	दिर	दा	दा
ध	-	म	ग	म	गग	रे	सा	ऩी	सा	म	-				
दा	-	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा	-				
												ग	मम	ध	नी
												दा	दिर	दा	दा
सां	नीनी	ध	म	प	ध	ग	-	रे	रेरे	सा	सा				
दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा	-	दा	दिर	दा	रा				
अन्तरा															
												ग	मम	ध	नी
												दा	दिर	दा	दा
सां	-	सां	सां	नी	सांसां	गं	रें	सां	नीनी	ध	म				
दा	-	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा				
												गं	रेंरें	सां	रें
												दा	दिर	दा	दा
सां	नीनी	ध	म	प	ध	ग	-	रे	रेरे	सा	सा				
दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा	-	दा	दिर	दा	रा				

10.3.4 बागेश्री राग की द्रुत गत के तांड़े

- सम से गत तक

सांनी	धनी	ध-	--
सांनी	धनी	ध-	--
सांनी	धनी	ध-	--

- सम से सम तक

गम	धनी	सांनी	धनी
ध-	--	गम	धनी
सांनी	धनी	ध-	--
गम	धनी	सांनी	धनी

- पाँचवी मात्रा से गत तक

गम	धनी	सांनी	धनी
सां-	सां-	सां-	--
गम	धनी	सांनी	धनी
सां-	सां-	सां-	--
गम	धनी	सांनी	धनी
सां-	सां-	सां-	--

- सम से सम तक

नीसा	गम	धनी	धम
गम	धम	गरे	सासा
नीसा	गम	ध-	नीसा
गम	ध-	नीसा	गम

- सम से सम तक

सांनी	धनी	धम	पध
ग-	मग	रेसा	नीसा
गम	गम	ध-	गम
गम	ध-	गम	गम

- सम से गत तक

ध़नी	सा,ध	नीसा,	ध़नी,
गम	ध,ग	मध,	गम,
धनी	सां,ध	नीसां,	धनी,
धनी	सांनी	धम	गम
धम	गम	गरे	सासा
गम	धनी	सां-	गम
धनी	सां-	गम	धनी

- सम से सम तक

ध़नी़	साग	नी़सा	गम
साग	मध	गम	धनी
मध	नीसां	धनी	सांगं
रेंसां	नीसां	नीध	नीध
मग	मग	रेसा	नी़सा
ग-	गम	ध-	--
नी़सा	ग-	गम	ध-
--	नी़सा	ग-	गम

- नी़नी़ नी़नी़ सासा सासा

गग	गग	मम	मम
धध	धध	नीनी	नीनी
सांसां	सांसां	गंगं	गंगं
मंमं	मंमं	गंगं	गंगं
रेंरें	रेंरें	सांसां	सांसां
नीनी	नीनी	धध	धध
नीनी	नीनी	धध	धध
मम	मम	धध	धध

गग	गग	मम	मम
गग	गग	रेरे	रेरे
सासा	सासा	नीनी	नीनी
धध	धध	मम	मम
धध	धध	नीनी	नीनी
सासा	सासा	नीनी	नीनी
सासा	सासा	नीनी	नीनी
• सासा	सासा	नीनी	नीनी
गग	गग	मम	मम
धध	धध	नीनी	नीनी
सांसां	सांसां	गंगं	गंगं
मंमं	मंमं	गंगं	गंगं
रेरें	रेरें	सांसां	सांसां
नीनी	नीनी	धध	धध
नीनी	नीनी	धध	धध
मम	मम	धध	धध
गग	गग	मम	मम
गग	गग	रेरे	रेरे

सासा	सासा	ऩीऩी	ऩीऩी
ध़ध़	ध़ध़	म़म़	म़म़
ध़ध़	ध़ध़	ऩीऩी	ऩीऩी
साऽ	ऽऽ	ऩीऩी	ऩीऩी
साऽ	ऽऽ	ऩीऩी	ऩीऩी

- साऽसा ऩीऽऩी

  गऽग मऽम

  धऽध नीऽनी

  सांऽसां गंऽगं

  मंऽमं गंऽगं

  रेंऽरें सांऽसां

  नीऽऽ नीधऽ

  ऽधनी ऽऽनी

  धऽऽ धमऽ

  ऽमध ऽऽध

  गऽऽ गमऽ

  ऽमग ऽऽग

  रेऽऽ रेसाऽ

ऽसाऩ़ी ऽऽऩ़ी

ध़ऽऽ ध़म़ऽ

ऽम़ध़ ऽऽध़

ऩ़ीऽऽ ऩ़ीसाऽ

ऽऽऩ़ी ऽऽऩ़ी

साऽऽ ऽऩ़ीऽ

ऽऩ़ीऽ साऽऽ

- खाली से सम तक

ध़ध़ध़	ऩ़ीऩ़ीनी़	सासासा	ऩ़ीऩ़ीऩ़ी
सासासा	गगग	रेरेरे	सासासा
ऩ़ीऩ़ीऩ़ी	सासासा	गगग	ममम
धधध	नीनीनी	सांसांसां	गंगंगं
मंमंमं	गंगंगं	रेंरेंरें	सांसांसां
नीनीनी	धधध	नीनीनी	धधध
ममम	धधध	गगग	ममम
गगग	रेरेरे	सासासा	ऩ़ीऩ़ीऩ़ी
ध़ध़ध़	म़म़म़	ध़ध़ध़	ऩ़ीऩ़ीऩ़ी
गगग	रेरेरे	ऩ़ीनी़नी़	सासासा

ऩीऽऽ	ऩीऽऽ	साऽऽ	ऩीऽऽ
ऩीऽऽ	साऽऽ	ऩीऽऽ	ऩीऽऽ

स्वयं जांच अभ्यास 1

10.1 बागेश्री राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) रे

ख) ग

ग) म

घ) नी

10.2 बागेश्री राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) काफी

ग) भैरवी

घ) तोड़ी

10.3 बागेश्री राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध नि ध प, म ग

ख) ध सां नि ध प, म ग

ग) नि ध म प ध ग

घ) ध नि सां नी ध म ग

10.4 बागेश्री राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 9

ख) 16

ग) 2

घ) 1

10.5 बागेश्री राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) म

ख) नि

ग) नी

घ) ग

10.6 बागेश्री राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) सा

ग) प

घ) म

10.7 बागेश्री राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) रात्रि का तीसरा प्रहर

घ) दोपहर

10.8 बागेश्री राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) कोई भी नहीं

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) गंधार

10.9 बागेश्री राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।

क) नहीं

ख) हां

10.10 बागेश्री राग, काफी तथा श्री रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

10.11 बागेश्री राग का समप्रकृतिक राग निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) काफी

ग) रागेश्री

घ) श्री

10.12 बागेश्री राग की जाति निम्न में से कौन सी है?

क) संपूर्ण संपूर्ण

ख) षाड़व संपूर्ण

ग) संपूर्ण औडव

घ) औडव संपूर्ण

10.13 निम्न में से कौन सा कथन ठीक है?

क) रागेश्री में गंधार शुद्ध तथा बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग होता है।

ख) रागेश्री में गंधार शुद्ध तथा बागेश्री में शुद्ध गंधार का प्रयोग होता है।

ग) रागेश्री में गंधार कोमल तथा बागेश्री में शुद्ध गंधार का प्रयोग होता है।

घ) रागेश्री में गंधार कोमल तथा बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग होता है।

10.14 निम्न में से कौन सा कथन ठीक है?

क) बागेश्री में म रे की संगति प्रमुखता से लगती है।

ख) बागेश्री में ध ग̲ की संगति प्रमुखता से लगती है।

ग) बागेश्री में म रे ग̲ की संगति प्रमुखता से लगती है।

घ) बागेश्री में म प ध ग की संगति प्रमुखता से लगती है।

10.15 निम्न में से कौन सा कथन ठीक है?

क) बागेश्री राग में गंधार का अल्प प्रयोग होता है।

ख) बागेश्री राग में पंचम का अल्प प्रयोग नहीं होता है।

ग) बागेश्री राग में पंचम का अल्प प्रयोग होता है।

घ) बागेश्री राग में धैवत का अल्प प्रयोग आरोह में होता है।

10.4 सारांश

बागेश्री राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रचलित राग है। बागेश्री राग काफी थाट जन्य तथा औडव-संपूर्ण जाति का माना जाता है। वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। इस राग में गंधार तथा निषाद कोमल प्रयुक्त होते हैं। बागेश्री राग के आरोह में रिषभ तथा पंचम वर्जित रहते हैं। इसका समय रात्रि का तीसरा प्रहर माना जाता है। बागेश्री एक अत्यन्त मधुर राग है। इस राग का उपयोग कर विद्वानों ने कई मधुर सांगीतिक रचनाएं की हैं। आरोह करते समय रिषभ वर्जित रहता है अतः प्रारम्भ में ऩी सा ग म ध, ऩी सा ग म आदि किया जाता है। इस राग में षड्ज से सीधे मध्यम पर भी आते हैं। बागेश्री राग में पंचम का अल्प प्रयोग होता है। इस राग में विलंबित गत को धीमी लय में बजाया जाता है। विलंबित गत में तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार के तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

10.75शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- द्रुत गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर-रचना जो लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा द्रुत लय में बजाई जाती हो उसे द्रुत गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, वाद्य पर बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।

- लय: वादन/आायन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

10.8 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

10.1 उत्तर: क)

10.2 उत्तर: ख)

10.3 उत्तर: ग)

10.4 उत्तर: घ)

10.5 उत्तर: क)

10.6 उत्तर: ख)

10.7 उत्तर: ग)

10.8 उत्तर: घ)

10.9 उत्तर: क)

10.10 उत्तर: ख)

10.11 उत्तर: ग)

10.12 उत्तर: घ)

10.13 उत्तर: क)

10.14 उत्तर: ख)

10.15 उत्तर: ग)

10.7 संदर्भ

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

डॉ. निर्मल सिंह से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, अप्रैल 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

10.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

10.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग बागेश्री का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग बागेश्री के तीन आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग बागेश्री की द्रुत गत लिखिए।

प्रश्न 4. राग बागेश्री की द्रुत गत के पांच तोड़े लिखिए।

इकाई-11
राग बागेश्री का बड़ा ख्याल

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
11.1	भूमिका
11.2	उद्देश्य तथा परिणाम
11.3	बागेश्री राग (गायन के संदर्भ में)
11.3.1	बागेश्री राग का परिचय (गायन के संदर्भ में)
11.3.2	बागेश्री राग का आलाप (गायन के संदर्भ में)
11.3.3	बागेश्री राग का बड़ा ख्याल
11.3.4	बागेश्री राग के बड़े ख्याल की तानें
	स्वयं जांच अभ्यास 1
11.4	सारांश
11.5	शब्दावली
11.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
11.7	संदर्भ
11.8	अनुशंसित पठन
11.9	पाठगत प्रश्न

11.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग बागेश्री का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग बागेश्री के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग बागेश्री का आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को गा सकेंगे।

11.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- बागेश्री राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- बागेश्री राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- बागेश्री राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- बागेश्री राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- बागेश्री राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- बागेश्री राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।

- राग बागेश्री के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

11.3 बागेश्री राग का परिचय

11.3.1 बागेश्री राग का परिचय

राग - बागेश्री

थाट - काफ़ी

जाति - औडव संपूर्ण

वादी - मध्यम

संवादी - षड्ज

स्वर - गंधार तथा निषाद कोमल (ग़ नि़)

वर्जित - आरोह में रिषभ तथा पंचम

समय - रात्रि का तीसरा प्रहर

समप्रकृतिक राग - रागेश्री

आरोह – ऩी सा ग़ म ध नि़ सां

अवरोह - सां नि़ ध, म प ध ग़, म ग़ रे सा

पकड़ - सां नि़ ध म प ध ग़, रे सा

बागेश्री राग काफी थाट का एक राग है। इसकी जाति औडव-संपूर्ण मानी जाती है। वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। इस राग में गंधार तथा निषाद कोमल प्रयुक्त होते हैं। बागेश्री राग के आरोह में रिषभ तथा पंचम वर्जित रहते हैं।

इसका समय रात्रि का तीसरा प्रहर माना जाता है। बागेश्री एक अत्यन्त मधुर राग है। इस राग का उपयोग कर विद्वानों ने कई मधुर सांगीतिक रचनाएं की हैं। आरोह करते समय रिषभ वर्जित रहता है

अतः प्रारम्भ में ऩी सा ग म ध, ऩी सा ग म आदि किया जाता है। इस राग में षड्ज से सीधे मध्यम पर भी आते हैं। जैसे- ऩी सा म ग रे सा। षड्ज से मध्यम पर आना इस राग की अपनी विशेषता है।

बागेश्री राग में पंचम का अल्प प्रयोग होता है। राग का अवरोह करते समय पंचम का प्रयोग केवल एक विशेष ढंग से किया जाता है, जैसे सां नी ध, म प ध ऽ ग, म ग रे सा। पंचम का सीधा प्रयोग राग में नहीं किया जाता है, जैसे सां नी ध प म आदि।

इस राग का प्रमुख स्वर समुदाय ध़ ऩी सा म, ग म ध नी ध तथा म प ध ग ऽ है।

इन्हीं के आधार पर आलाप तान आदि की रचनाएं की जाती हैं। इस राग में ध ग की संगति प्रयुक्त होती है, जैसे- म प ध ग, रे सा। बाग्रश्री राग का आरम्भ (आलाप) सा ऩी ध़ ऩी सा म या ध़ ऩी सा म करते हुए ही करना चाहिए।

इसका समप्रकृतिक राग रागेश्री है। दोनों में अंतर यह है कि बागेश्री में पंचम का प्रयोग किया जाता है वही रागेश्री में पंचम वर्जित रहता है। बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग है वहीं दूसरी ओर रागेश्री में गंधार शुद्ध है जैसे- बागेश्री - ऩी सा म ग, म ध नी ध, म प ध ग, म ग रे सा। रागेश्री – ऩी सा ग म, ग म ध नी ध म, ग म रे सा।

11.3.2 आलाप

- सा ऽ ऽ सा, ऩी सा, सा, ऩी ध़ - सा रे सा,
- ध़ ऩी ऩी ध़ ऩी सा, सा ऩी ध़ म़ -,

  म़ ध़ ऩी ऩी सा, सा,
- ध़ ऩी सा म ग – म ग रे सा

- सा <u>नी</u> ध़ <u>नी</u> ध़ -, म़ म़ ध़,

  म़ ध़ <u>नी</u> <u>नी</u> सा, सा

- ध़ <u>नी</u> सा म -, <u>ग</u> म <u>ग</u> रे सा, <u>ग</u> म

  <u>ग</u> – <u>ग</u> म ध – म <u>ग</u>, म <u>ग</u> रे सा

- म <u>ग</u> ध, ध म – ध <u>नी</u> ध म,

  म ध <u>नी</u> <u>नी</u> सां, सां

- सां – <u>गं</u> <u>गं</u> रें सां -, ध <u>नी</u> <u>नी</u> सां ,

  मं <u>गं</u> रें सां सां,

- सां <u>नी</u> ध <u>नी</u> ध – म प ध <u>ग</u> –

  म <u>ग</u> रे सा, ध़ <u>नी</u> <u>नी</u>

  सा म <u>ग</u> रे सा, सा

11.3.3 बागेश्री बड़ा ख्याल विलम्बित लय एक ताल

स्थायी

कासे कहूँ मन की बतियाँ, तरपत बीतत रतियाँ।

अन्तरा

सुजन पिया – परदेस गवन किनो, लिखी न पतियाँ।।

स्थायी

X		0		2		0		3		4	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
								सां	नि	धप	धनि
								का	ऽ	ऽऽ	सेक
सां	ऽ	नि	ध	मपध	ग	रे	सा				
हूँ	ऽ	म	न	कीऽऽ	ब	ति	यां				
								ध	नि	सा	सा
								त	रे	प	त
म	ध	नि	ध	ग	रे	सा	ऽ				
बी	ऽ	त	त	र	ति	यां	ऽ				

अंतरा

								म	ध	नि	निध
								सु	ज	न	पिऽ
सां	ऽ	नि	सां	मं	गं	रें	सां				
या	ऽ	प	र	दे	ऽ	स	ग				

X		0		2		0		3		4	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
								नि	ध	म	सां
								व	न	की	ऽ
नि	ध	मपध	ग	म	ग	रे	सा				
नो	लि	खीऽऽ	न	प	ति	यां	ऽ				

स्थायी

X		0		2		0		3		4	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
								सां	नि	धप	धनि
								का	ऽ	ऽऽ	सेक
सां	ऽ	नि	ध	मपध	ग	रे	सा				
हूँ	ऽ	म	न	कीऽऽ	ब	ति	यां				
								ध	नि	सा	सा
								त	रे	प	त
म	ध	नि	ध	ग	रे	सा	ऽ				
बी	ऽ	त	त	र	ति	यां	ऽ				

11.3.4 बागेश्री की तानें

- सम से गत तक

साऩीध़ऩी	रेसाऩीध़
मगरेसा	धमगम
नीधनीध	सांनीसांनी
रेंसारेंसां	नीधनीध
सासाधनी	धमगम
गरेसा-	

- सम से सम तक

ऩीऩीऩी	सासासा
गगग	ममम
धधध	नीनीनी
सांसांसां	गंगंगं
मंमंमं	गंगंग
रेंरेंरें	सांसांसां
नीनीनी	धधध
नीनीनी	धधध
ममम	धधध

गगग	ममम
गगग	रेरेरे
सासासा	ऩीऩीनी़
ध़ध़ध़	म़म़म़
ध़ध़ध़	ऩीनी़नी़
सासासा	ऩीनी़नी़
सासासा	ऩीनी़नी़

- सम से सम तक

साऽसा ऩीऽऩी	गऽग मऽम
धऽधनीऽनी	सांऽसांगंऽगं
मंऽमंगंऽगं	रेंऽरेंसांऽसां
नीऽऽनीधऽऽध	नीऽऽनीधऽऽध
मऽऽमधऽऽध	गऽऽगमऽऽम
गऽऽगरेऽऽरे	साऽऽसाऩीऽऽऩी
ध़ऽऽध़मऽऽम़	ध़ऽऽध़ऩीऽऽऩी
साऽऽऽऩीऽऽऩी	साऽऽऽऩीऽऽऩी

- 12वीं मात्रा से सम तक

ध़ऩीसाऩी	सा---

ध़नी़सा़नी़ सा---

ध़नी़सा़नी़

- पाँचवीं मात्रा से गत तक

सा़नी़धनी़ रेसा़नी़सा

मगरेसा धमगम

नीधसांनी धमगम

गरेसा-

- सम से सम तक

मगरेसा गरेसा़नी़

रेसा़नी़ध़ सा़नी़ध़नी़

सासा़नी़सा गगसाग

ममगम धधमध

नीनीधनी सांसांनीसां

गंगरेंसां नीधसांनी

धनीधम गमधनी

सांनीधम धमगरे

- सम से सम तक

नी़सागग सागमम

गमधध	मधनीनी
धनीसांसां	नीसांगंगं
रेंसांनीसां	धनीधम
मगरेसा	मगरेसा
नीसाध़नी	सा-मग
रेसानीसा	ध़नीसा-
मगरेसा	नीसाध़नी

- सम से सम तक

नीनीनीनी	सासासासा
गगगग	ममम
धधधध	नीनीनीनी
सांसांसांसां	गंगंगंगं
मंमंमंमं	गंगंगंगं
रेंरेंरेंरें	सांसांसांसां
नीनीनीनी	धधधध
नीनीनीनी	धधधध
ममम	धधधध
गगगग	ममम

गगगग	रेरेरेरे
सासासासा	ऩीऩीऩीऩी
ध़ध़ध़ध़	म़म़म़म़
ध़ध़ध़ध़	ऩीऩीऩीऩी
सासासासा	ऩीऩीऩीऩी
सासासासा	ऩीऩीऩीऩी

- सम से सम तक

सासासासाऩीऩीऩीऩी	गगगगमममम
धधधधनीनीनीनी	सांसांसांसांगंगंगंगं
मंमंमंमंगंगंगंगं	रेंरेंरेंरेंसांसांसांसां
नीनीनीनीधधधध	नीनीनीनीधधधध
मममधधधध	गगगगमममम
गगगगरेरेरेरे	सासासासाऩीऩीऩीऩी
ध़ध़ध़ध़म़म़म़म़	ध़ध़ध़ध़ऩीऩीऩीऩी
साऽऽऽऩीऩीऩीऩी	साऽऽऽऩीऩीऩीऩी

- खाली से सम तक

ध़ध़ध़ऩीऩीनी	सासासाऩीऩीऩी
सासासागगग	रेरेरेसासासा

ऩीऩीऩीसासासा	गगगममम
धधधनीनीनी	सांसांसांगंगंगं
मंमंमंगंगंगं	रेंरेंरेंसांसांसां
नीनीनीधधध	नीनीनीधधध
मममधधध	गगगममम
गगगरेंरेंरे	सासासाऩीऩीऩी
ध़ध़ध़मम़म़	ध़ध़ध़ऩीऩीऩी
गगगरेंरेंरे	ऩीनी़ीसासासा
ऩीऽऽऩीऽऽ	साऽऽऩीऽऽ
ऩीऽऽसाऽऽ	ऩीऽऽऩीऽऽ
ऽऩीऩीऩी	ऽसासासा
ऽगगग	ऽममम
ऽधधध	ऽनीनीनी
ऽसांसांसां	ऽरेंरेंरें
ऽनीनीनी	ऽधधध
ऽनीनीनी	ऽधधध
ऽममम	ऽधधध
ऽगगग	ऽममम

ऽगगग	ऽरेरेरे
ऽसासासा	ऽऩीऩीनी
ऽध़ध़ध़	ऽम़म़म़
ऽध़ध़ध़	ऽऩीनी़नी़
ऽसासासा	ऽऩीनी़नी़
ऽसासासा	ऽऩीनी़नी़

स्वयं जांच अभ्यास 1

11.1 बागेश्री राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।

क) नहीं

ख) हां

11.2 बागेश्री राग, काफी तथा श्री रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

11.3 बागेश्री राग का समप्रकृतिक राग निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) काफी

ग) रागेश्री

घ) श्री

11.4 बागेश्री राग की जाति निम्न में से कौन सी है?

क) संपूर्ण संपूर्ण

ख) षाड़व संपूर्ण

ग) संपूर्ण औडव

घ) औडव संपूर्ण

11.5 बागेश्री राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) रे

ख) ग

ग) म

घ) नी

11.6 बागेश्री राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) काफी

ग) भैरवी

घ) तोड़ी

11.7 बागेश्री राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध नि ध प, म ग

ख) ध सां नि ध प, म ग

ग) नि ध म प ध ग

घ) ध नि सां नी ध म ग

11.8 बागेश्री राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 9

ख) 16

ग) 2

घ) 1

11.9 बागेश्री राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) म

ख) नि

ग) नी

घ) ग

11.10 बागेश्री राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) सा

ग) प

घ) म

11.11 बागेश्री राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) रात्रि का तीसरा प्रहर

घ) दोपहर

11.12 बागेश्री राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) कोई भी नहीं

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) गंधार

11.13 निम्न में से कौन सा कथन ठीक है?

क) रागेश्री में गंधार शुद्ध तथा बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग होता है।

ख) रागेश्री में गंधार शुद्ध तथा बागेश्री में शुद्ध गंधार का प्रयोग होता है।

ग) रागेश्री में गंधार कोमल तथा बागेश्री में शुद्ध गंधार का प्रयोग होता है।

घ) रागेश्री में गंधार कोमल तथा बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग होता है।

11.14 निम्न में से कौन सा कथन ठीक है?

क) बागेश्री में म रे की संगति प्रमुखता से लगती है।

ख) बागेश्री में ध ग़ की संगति प्रमुखता से लगती है।

ग) बागेश्री में म रे ग़ की संगति प्रमुखता से लगती है।

घ) बागेश्री में म प ध ग की संगति प्रमुखता से लगती है।

11.15 निम्न में से कौन सा कथन ठीक है?

क) बागेश्री राग में गंधार का अल्प प्रयोग होता है।

ख) बागेश्री राग में पंचम का अल्प प्रयोग नहीं होता है।

ग) बागेश्री राग में पंचम का अल्प प्रयोग होता है।

घ) बागेश्री राग में धैवत का अल्प प्रयोग आरोह में होता है।

11.4 सारांश

बागेश्री राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रचलित राग है। बागेश्री राग काफी थाट जन्य तथा औडव-संपूर्ण जाति का माना जाता है। वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। इस राग में गंधार तथा निषाद कोमल प्रयुक्त होते हैं। बागेश्री राग के आरोह में रिषभ तथा पंचम वर्जित रहते हैं। इसका समय रात्रि का तीसरा प्रहर माना जाता है। बागेश्री एक अत्यन्त मधुर राग है। इस राग का उपयोग कर विद्वानों ने कई मधुर सांगीतिक रचनाएं की हैं। आरोह करते समय रिषभ वर्जित रहता है अतः प्रारम्भ में ऩी सा ग म ध, ऩी सा ग म आदि किया जाता है। इस राग में षड्ज से सीधे मध्यम पर भी आते हैं। बागेश्री राग में पंचम का अल्प प्रयोग होता है। इस राग का प्रमुख स्वर समुदाय ध़ ऩी सा म, ग़ म ध नी ध तथा म प ध ग़ ऽ है। इसका समप्रकृतिक राग रागेश्री है। बागेश्री में पंचम का प्रयोग किया जाता है वहीं रागेश्री में पंचम वर्जित रहता है। बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग है वहीं दूसरी ओर रागेश्री में गंधार शुद्ध है जैसे- बागेश्री - ऩी सा म ग़, म ध नी ध, म प ध ग़, म ग़ रे सा। रागेश्री – ऩी सा ग म, ग म ध नी ध म, ग म रे सा। इस राग में विलंबित गत को धीमी लय में बजाया जाता है। विलंबित गत में तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार के तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

11.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- बड़ा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।

11.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

11.1 उत्तर: क)

11.2 उत्तर: ख)

11.3 उत्तर: ग)

11.4 उत्तर: घ)

11.5 उत्तर: क)

11.6 उत्तर: ख)

11.7 उत्तर: ग)

11.8 उत्तर: घ)

11.9 उत्तर: क)

11.10 उत्तर: ख)

11.11 उत्तर: ग)

11.12 उत्तर: घ)

11.13 उत्तर: क)

11.14 उत्तर: ख)

11.15 उत्तर: ग)

11.7 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

11.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

11.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग बागेश्री का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग बागेश्री के तीन आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग बागेश्री के बड़े ख्याल को लिखिए।

प्रश्न 4. राग बागेश्री के बड़े ख्याल की पांच तानों को लिखिए।

इकाई-12
राग बागेश्री - छोटा ख्याल

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
12.1	भूमिका
12.2	उद्देश्य तथा परिणाम
12.3	राग बागेश्री (गायन के संदर्भ में)
	12.3.1 बागेश्री राग का परिचय (गायन के संदर्भ में)
	12.3.2 बागेश्री राग का आलाप (गायन के संदर्भ में)
	12.3.3 बागेश्री राग का छोटा ख्याल
	12.3.4 बागेश्री राग के छोटे ख्याल की तानें
	स्वयं जांच अभ्यास 1
12.4	सारांश
12.5	शब्दावली
12.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
12.7	संदर्भ
12.8	अनुशंसित पठन
12.9	पाठगत प्रश्न

12.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग बागेश्री का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग बागेश्री के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग बागेश्री का आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गा सकेंगे।

12.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- बागेश्री राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- बागेश्री राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- बागेश्री राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- बागेश्री राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- बागेश्री राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- बागेश्री राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।

- राग बागेश्री के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

12.3 राग बागेश्री (गायन के संदर्भ में)

12.3.1 बागेश्री राग का परिचय

राग - बागेश्री

थाट - काफ़ी

जाति - औडव संपूर्ण

वादी - मध्यम

संवादी - षड्ज

स्वर - गंधार तथा निषाद कोमल (ग़ नि़)

वर्जित - आरोह में रिषभ तथा पंचम

समय - रात्रि का तीसरा प्रहर

समप्रकृतिक राग - रागेश्री

आरोह – ऩी सा ग़ म ध नि़ सां

अवरोह - सां नि़ ध, म प ध ग़, म ग़ रे सा

पकड़ - सां नि़ ध म प ध ग़, रे सा

बागेश्री राग काफी थाट का एक राग है। इसकी जाति औडव-संपूर्ण मानी जाती है। वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। इस राग में गंधार तथा निषाद कोमल प्रयुक्त होते हैं। बागेश्री राग के आरोह में रिषभ तथा पंचम वर्जित रहते हैं।

इसका समय रात्रि का तीसरा प्रहर माना जाता है। बागेश्री एक अत्यन्त मधुर राग है। इस राग का उपयोग कर विद्वानों ने कई मधुर सांगीतिक रचनाएं की हैं।

आरोह करते समय रिषभ वर्जित रहता है अतः प्रारम्भ में नी सा ग म ध, नी सा ग म आदि किया जाता है। इस राग में षड्ज से सीधे मध्यम पर भी आते हैं। जैसे-नी सा म ग रे सा। षड्ज से मध्यम पर आना इस राग की अपनी विशेषता है। बागेश्री राग में पंचम का अल्प प्रयोग होता है। राग का अवरोह करते समय पंचम का प्रयोग केवल एक विशेष ढंग से किया जाता है, जैसे सां नी ध, म प ध ऽ ग, म ग रे सा। पं

चम का सीधा प्रयोग राग में नहीं किया जाता है, जैसे सां नी ध प म आदि।

इस राग का प्रमुख स्वर समुदाय ध़ नी सा म, ग म ध नी ध तथा म प ध ग ऽ है। इन्हीं के आधार पर आलाप तान आदि की रचनाएं की जाती हैं। इस राग में ध ग की संगति प्रयुक्त होती है, जैसे- म प ध ग, रे सा। बाग्रश्री राग का आरम्भ (आलाप) सा नी ध़ नी सा म या ध़ नी सा म करते हुए ही करना चाहिए।

इसका समप्रकृतिक राग रागेश्री है। दोनों में अंतर यह है कि बागेश्री में पंचम का प्रयोग किया जाता है वही रागेश्री में पंचम वर्जित रहता है। बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग है वहीं दूसरी ओर रागेश्री में गंधार शुद्ध है जैसे- बागेश्री - नी सा म ग, म ध नी ध, म प ध ग, म ग रे सा। रागेश्री – नी सा ग म, ग म ध नी ध म, ग म रे सा।

12.3.2 आलाप

- सा, नी सा, सा, नी ध़ - सा रे सा,
- ध़ नी नी ध़ नी सा, सा नी ध़ म़ -,

  म़ ध़ नी नी सा, सा,
- ध़ नी सा म ग – म ग रे सा

- सा ऩी ध़ ऩी ध़ -, म़ म़ ध़,

  म़ ध़ ऩी ऩी सा, सा

- ध़ ऩी सा म -, ग म ग रे सा, ग

  म ग – ग म ध – म ग, म ग रे सा

- म ग ध, ध म – ध नी ध म,

  म ध नी नी सां, सां

- सां – गं गं रें सां -, ध नी नी सां,

  मं गं रें सां सां,

- सां नी ध नी ध – म प ध

  ग – म ग रे सा,

  ध़ ऩी ऩी सा म ग रे सा, सा

12.3.3 बागेश्री छोटा ख्याल द्रुत लय तीन ताल

राग: बागेश्री **ताल: एकताल** **लय: द्रुत लय**

स्थाई

पीऊ-पीऊ बोले पपीहा वन में,

हूँक उठत है मोरे मन में,

अन्तरा

जब से गये परदेस बेदर्दी,

जीना मारना मुश्किल करदी।

"सुजन" जले बिरहा के अगन में।

स्थायी

X				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
								सां	सां	सां	नि	ध	प	ध	नि
								पी	ऊ	पी	ऊ	बो	ऽ	ले	प
ध	ऽ	ग	म	ग	रे	सा	ऽ								
पी	ऽ	ऽ	हा	व	न	में	ऽ								
								प	नि	सा	म	ग	रे	सा	ऽ
								हूँ	ऽ	क	उ	ठ	त	है	ऽ
म	ध	मध	निसां	निध	पम	गरे	साऽ								
मो	ऽ	रेऽ	ऽऽ	मऽ	नऽ	मेंऽ	ऽऽ								

अंतरा

								ग	म	ध	नि	सां	ऽ	सां	सां
								जा	ब	से	ग	ये	ऽ	प	र
सां	ऽ	सां	सां	नि	सां	नि	ध								
दे	ऽ	स	बी	द	र	दी	ऽ								
								ध	नि	सां	मं	गं	रें	सां	ऽ
								जी	ऽ	ना	ऽ	म	र	न	ऽ
सां	सां	सां	सां	नि	सां	नि	ध								
मु	शि	क	ल	क	र	दी	ऽ								
								ध	ध	ध	प	ध	नि	ध	ध
								सु	ज	न	ज	ले	ऽ	बि	र
ग	ऽ	ग	ग	ग	रे	सा	ऽ								
हा	ऽ	के	अ	ग	न	में	ऽ								

12.3.4 बागेश्री राग की तानें

- सम से सम तक

नीसा गम धनी धम

गम धम गरे सासा

ऩीसा	गम	ध-	ऩीसा
गम	ध-	ऩीसा	गम

- सम से सम तक

सांनी	धनी	धम	पध
ग-	मग	रेसा	ऩीसा
गम	गम	ध-	गम
गम	ध-	गम	गम

- सम से गत तक

सांनी	धनी	ध-	--
सांनी	धनी	ध-	--
सांनी	धनी	ध-	--

- सम से सम तक

गम	धनी	सांनी	धनी
ध-	--	गम	धनी
सांनी	धनी	ध-	--
गम	धनी	सांनी	धनी

- पाँचवी मात्रा से गत तक

गम	धनी	सांनी	धनी

सां-	सां-	सां-	--
ग॒म	ध॒नी	सां॒नी	ध॒नी
सां-	सां-	सां-	--
ग॒म	ध॒नी	सां॒नी	ध॒नी
सां-	सां-	सां-	--

- सम से ग॒त तक

ध़॒नी	सा,ध़	ऩी॒सा,	ध़॒नी,
ग॒म	ध,ग॒	मध,	ग॒म,
ध॒नी	सां,ध	नी॒सां,	ध॒नी,
ध॒नी	सां॒नी	धम	ग॒म
धम	ग॒म	ग॒रे	सासा
ग॒म	ध॒नी	सां-	ग॒म
ध॒नी	सां-	ग॒म	ध॒नी

- सम से सम तक

ध़॒नी	साग॒	ऩी॒सा	ग॒म
साग॒	मध	ग॒म	ध॒नी
मध	नी॒सां	ध॒नी	सांगं
रेंसां	नी॒सां	नी॒ध	नी॒ध

मग	मग	रेसा	नीसा
ग-	गम	ध-	--
नीसा	ग-	गम	ध-
--	नीसा	ग-	गम
• नीनी	नीनी	सासा	सासा
गग	गग	मम	मम
धध	धध	नीनी	नीनी
सांसां	सांसां	गंगं	गंगं
मंमं	मंमं	गंगं	गंगं
रेंरें	रेंरें	सांसां	सांसां
नीनी	नीनी	धध	धध
नीनी	नीनी	धध	धध
मम	मम	धध	धध
गग	गग	मम	मम
गग	गग	रेरे	रेरे
सासा	सासा	नीनी	नीनी
ध़ध़	ध़ध़	म़म़	म़म़
ध़ध़	ध़ध़	नीनी	नीनी

सासा सासा ऩीऩी ऩीऩी

सासा सासा ऩीऩी ऩीऩी

- सासा सासा ऩीऩी ऩीऩी

गग गग मम मम

धध धध नीनी नीनी

सांसां सांसां गंगं गंगं

मंमं मंमं गंगं गंगं

रेंरें रेंरें सांसां सांसां

नीनी नीनी धध धध

नीनी नीनी धध धध

मम मम धध धध

गग गग मम मम

गग गग रेरे रेरे

सासा सासा ऩीऩी ऩीऩी

ध़ध़ ध़ध़ म़म़ म़म़

ध़ध़ ध़ध़ ऩीऩी ऩीऩी

साऽ ऽऽ ऩीऩी ऩीऩी

साऽ ऽऽ ऩीऩी ऩीऩी

- साऽसा
  गऽग
  धऽध
  सांऽसां
  मंऽमं
  रेंऽरें
  नीऽऽ
  ऽधनी
  धऽऽ
  ऽमध
  गऽऽ
  ऽमग
  रेऽऽ
  ऽसाऩी
  ध़ऽऽ
  ऽम़ध़
  ऩीऽऽ
  ऽऽऩी

  ऩीऽऩी
  मऽम
  नीऽनी
  गंऽगं
  गंऽगं
  सांऽसां
  नीधऽ
  ऽऽनी
  धमऽ
  ऽऽध
  गमऽ
  ऽऽग
  रेसाऽ
  ऽऽऩी
  ध़म़ऽ
  ऽऽध़
  ऩीसाऽ
  ऽऽऩी

साऽऽ	ऽऩीऽ
ऽऩीऽ	साऽऽ

- खाली से सम तक

ध़ध़ध़	ऩीऩीनी़	सासासा	ऩीऩीऩी
सासासा	गगग	रेरेरे	सासासा
ऩीऩीऩी	सासासा	गगग	ममम
धधध	नीनीनी	सांसांसां	गंगंगं
मंमंमं	गंगंगं	रेंरेंरें	सांसांसां
नीनीनी	धधध	नीनीनी	धधध
ममम	धधध	गगग	ममम
गगग	रेरेरे	सासासा	ऩीऩीऩी
ध़ध़ध़	म़म़म़	ध़ध़ध़	ऩीऩीऩी
गगग	रेरेरे	ऩीनी़नी़	सासासा
ऩीऽऽ	ऩीऽऽ	साऽऽ	ऩीऽऽ
ऩीऽऽ	साऽऽ	ऩीऽऽ	ऩीऽऽ

स्वयं जांच अभ्यास 1

12.1 निम्न में से कौन सा कथन ठीक है?

क) रागेश्री में गंधार शुद्ध तथा बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग होता है।

ख) रागेश्री में गंधार शुद्ध तथा बागेश्री में शुद्ध गंधार का प्रयोग होता है।

ग) रागेश्री में गंधार कोमल तथा बागेश्री में शुद्ध गंधार का प्रयोग होता है।

घ) रागेश्री में गंधार कोमल तथा बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग होता है।

12.2 निम्न में से कौन सा कथन ठीक है?

क) बागेश्री में म रे की संगति प्रमुखता से लगती है।

ख) बागेश्री में ध ग़ की संगति प्रमुखता से लगती है।

ग) बागेश्री में म रे ग़ की संगति प्रमुखता से लगती है।

घ) बागेश्री में म प ध ग की संगति प्रमुखता से लगती है।

12.3 निम्न में से कौन सा कथन ठीक है?

क) बागेश्री राग में गंधार का अल्प प्रयोग होता है।

ख) बागेश्री राग में पंचम का अल्प प्रयोग नहीं होता है।

ग) बागेश्री राग में पंचम का अल्प प्रयोग होता है।

घ) बागेश्री राग में धैवत का अल्प प्रयोग आरोह में होता है।

12.4 बागेश्री राग की जाति निम्न में से कौन सी है?

क) संपूर्ण संपूर्ण

ख) षाड़व संपूर्ण

ग) संपूर्ण औडव

घ) औडव संपूर्ण

12.5 बागेश्री राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) रे

ख) ग़

ग) म

घ) नी़

12.6 बागेश्री राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) काफी

ग) भैरवी

घ) तोड़ी

12.7 बागेश्री राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध नि ध प, म ग

ख) ध सां नि ध प, म ग

ग) नि ध म प ध ग

घ) ध नि सां नी ध म ग

12.8 बागेश्री राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 9

ख) 16

ग) 2

घ) 1

12.9 बागेश्री राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) म

ख) नि

ग) नी

घ) ग

12.10 बागेश्री राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) सा

ग) प

घ) म

12.11 बागेश्री राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) रात्रि का तीसरा प्रहर

घ) दोपहर

12.12 बागेश्री राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) कोई भी नहीं

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) गंधार

12.13 बागेश्री राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।

क) नहीं

ख) हां

12.14 बागेश्री राग, काफी तथा श्री रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

12.15 बागेश्री राग का समप्रकृतिक राग निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) काफी

ग) रागेश्री

घ) श्री

12.4 सारांश

बागेश्री राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रचलित राग है। बागेश्री राग काफी थाट जन्य तथा औडव-संपूर्ण जाति का माना जाता है। वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। इस राग में गंधार तथा निषाद कोमल प्रयुक्त होते हैं। बागेश्री

राग के आरोह में रिषभ तथा पंचम वर्जित रहते हैं। इसका समय रात्रि का तीसरा प्रहर माना जाता है। बागेश्री एक अत्यन्त मधुर राग है। इस राग का उपयोग कर विद्वानों ने कई मधुर सांगीतिक रचनाएं की हैं। आरोह करते समय रिषभ वर्जित रहता है अतः प्रारम्भ में ऩी सा ग म ध, ऩी सा ग म आदि किया जाता है। इसका समप्रकृतिक राग रागेश्री है। दोनों में अंतर यह है कि बागेश्री में पंचम का प्रयोग किया जाता है वही रागेश्री में पंचम वर्जित रहता है। बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग है वहीं दूसरी ओर रागेश्री में गंधार शुद्ध है जैसे- बागेश्री - ऩी सा म ग, म ध नी ध, म प ध ग, म ग रे सा। रागेश्री – ऩी सा ग म, ग म ध नी ध म, ग म रे सा। इस राग में षड्ज से सीधे मध्यम पर भी आते हैं। बागेश्री राग में पंचम का अल्प प्रयोग होता है। इस राग में विलंबित गत को धीमी लय में बजाया जाता है। विलंबित गत में तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार के तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

12.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- छोटा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।
- बड़ा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

12.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

12.1 उत्तर: क)

12.2 उत्तर:ख)

12.3 उत्तर: ग)

12.4 उत्तर: घ)

12.5 उत्तर: क)

12.6 उत्तर: ख)

12.7 उत्तर: ग)

12.8 उत्तर: ख)

12.9 उत्तर: क)

12.10 उत्तर: ख)

12.11 उत्तर: ग)

12.12 उत्तर: घ)

12.13 उत्तर: क)

12.14 उत्तर: ख)

12.15 उत्तर: ग)

12.7 संदर्भ

डॉ. केशव शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, मार्च 2024।

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). मधुर स्वरलिपि संग्रह (भाग 1-3), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

12.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

12.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग बागेश्री का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग बागेश्री के तीन आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग बागेश्री के छोटा ख्याल को लिखिए।

प्रश्न 4. राग बागेश्री के छोटे ख्याल की पांच तानों को लिखिए।

अध्याय-13
ठुमरी

अध्याय की रूपरेखा

क्रम		विवरण
13.1		भूमिका
13.2		उद्देश्य तथा परिणाम
13.3		ठुमरी
	13.3.1	ठुमरी का परिचय
	13.3.2	भैरवी
	13.3.3	आलाप
	13.3.4	भैरवी में ठुमरी - त्रिताल (गायन)
	13.3.5	तानें
	13.3.6	राग-मिश्र पीलू में ठुमरी अद्धा ताल (वादन)
		स्वयं जांच अभ्यास 1
13.4		सारांश
13.5		शब्दावली
13.6		स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
13.7		संदर्भ
13.8		अनुशंसित पठन
13.9		पाठगत प्रश्न

13.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) स्नात्कोत्तर के क्रियात्मक पाठ्यक्रम की इस इकाई में उप शास्त्रीय संगीत की गयन शैली ठुमरी के विषय में जानकारी दी गई है। ठुमरी एक भाव प्रधान तथा चपल चाल वाला गीत है जिसको आज कल शास्त्रीय संगीत में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। यह एक तरह से नृत्य गीत रहा है। यह श्रृंगार रस प्रधान होती है। शब्दों की कोमलता और स्वरों का भाव प्रधान प्रयोग इस शैली की मुख्य विशेषता है। ठुमरी दो अंगों से गाई जाती है - पूर्व अंग और पंजाब अंग। ठुमरी उत्तर भारतीय उप शास्त्रीय संगीत की एक कर्णप्रिय, लोकप्रिय तथा प्रचलित विधा है। इसे आज के समय में वादक तथा गायक अपने मंच प्रदर्शन के दौरान प्रस्तुत करते हैं।

13.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- ठुमरी के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- ठुमरी को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- ठुमरी को गाने की क्षमता विकसित करना।
- ठुमरी को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी को गायन/वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी ठुमरी गायन/वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा।
- ठुमरी के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्राप्त होगी।
- ठुमरी को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- ठुमरी के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव प्राप्त होगा।

13.3 ठुमरी

13.3.1 ठुमरी का परिचय

ठुमरी एक भाव प्रधान तथा चपल चाल वाला गीत है जिसको आज कल उपशास्त्रीय संगीत में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। यह एक तरह से नृत्य गीत रहा है। इसका रस श्रृंगार प्रधान होता है। राधा-कृष्ण से आरम्भ कर सामान्य नायक-नायिकाओं के रस भरे श्रृंगार तक की अभिव्यक्ति इसमें होती रही है। इसकी गायन शैली एक विशिष्ट प्रकार की होती है। शब्दों की कोमलता और स्वरों की नज़ाकत इस शैली की मुख्य विशेषता है। स्वरों के माध्यम से वही भाव मुखर हो उठते हैं, जो नृत्य में अभिनय के द्वारा व्यक्त होते हैं। दूसरे शब्दों में ठुमरी, नृत्य का ही मुखर रूप मानी जा सकती है। इसका आरम्भ तथा विकास नृत्य के साथ-साथ ही हुआ है। ऐसे भाव-गीत प्राचीन संगीत में थे जिनको लेकर ही नृत्य तथा अभिनय किया जाता है।

ठुमरी गीत नाज़ुक तथा चपल प्रवृति का होने के कारण इसको गाने के लिए वैसे ही रागों को चुना जाता है। खमाज, काफी, मांड, तिलंग, पीलू तथा भैरवी जैसे रागों को पसन्द किया जाता है। दादरा, कहरवा जैसे द्रुत लय के ताल इसके लिए विशेष अनुकूल हैं। इसकी कोमलता के अनुपात से छोटी-छोटी तानों एवं मुरकियों का प्रयोग इसमें किया जाता है। मुख्य राग के अतिरिक्त दूसरे रागों का हल्का सा स्पर्श इसमें निषेद्ध नहीं अपितु आवश्यक समझा जाता है। इसी कारण शास्त्रीय गायकों के द्वारा यह गीत ध्रुपद तथा ख्याल की अपेक्षा कम दर्जे का माना जाता है।

आधुनिक ठुमरी का विकास अवध के दरबार में हुआ। इसके लिए दरबार का विलासमय वातावरण तो पोषक ही हुआ, परन्तु उस समय के काव्य जगत में प्रचलित 'रीतिका लीन श्रृंगार' भी इसको बढ़ाने में सहायक हुआ। तत्तकालीन नवाबों के दरबार अपनी विलासित एवं कलात्मकता के लिए प्रसिद्ध थे। लखनऊ के नवाब वाजिद अली शाह उच्चकोटी के रसिक एवं नर्तक थे। उन्होंने राधा-कृष्ण के संयोग-वियोग को लेकर कई ठुमरी गीतों की रचना करवाई।

नृत्य के ठुमकने का भाव इसमें होने के कारण इसका नामकरण ''ठुमरी'' हुआ। गीत गाने के साथ ही विभिन्न अंगों के द्वारा किए जाने वाले अभिनय से उन भावों को प्रकट करना ठुमरी के लिए आवश्यक था। ठुमरी गायन के लिए ऐसे

कलाकारों की ज़रूरत रही, जो रसीली प्रकृति के हों, अनूकूल कंठ वाले हों और प्रतिभावान हों। इस स्थिति में यह गायकी नारी कंठ के लिए ही अधिक अनुकूल रही हो तो आश्चर्य नही।

ठुमरी दो अंगों से गाई जाती है - पूर्व अंग और पंजाब अंग। पूर्व अंग लखनऊ तथा बनारस में प्रचलित है और बोल-बनाव के लिए प्रसिद्ध है। कदर पिया और लगन पिया, वाजिद अली शाह के ज़माने के प्रमुख ठुमरी गायक थे। बिन्दादीन, मौजूदीन, इस शैली के महान गायक रहे हैं। रसूलन बाई, बड़ी मोती बाई, सिद्धेश्वरी देवी, बेगम अख्तर तथा गिरीजा देवी पूरब अंग की प्रसिद्ध गायिकाएं रहीं हैं। पंजाब अंग की ठुमरी गायकी टप्पे की छोटी-छोटी तानों तथा विचित्र स्वरावलियों को लेकर आगे बढ़ती है। एक ही स्वर के विभिन्न रूपों को एक साथ गाना इसी अंग की विशेषता है। स्वर्गीय बड़े गुलामअली खां इस अंग के सिद्धस्त गायक रहे हैं।

विगत वर्षों से ठुमरी एक अत्यन्त लोकप्रिय गीत प्रकार रहा है। इसलिए प्रायः सभी ख्याल गायक ठुमरी गाते भी दिखाई देते हैं। इस दिशा में स्व0 अब्दुल करीम खां, फैयाज़ खां तथा हीरा बाई बड़ोदकर के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। ख्याल गायकी के विभिन्न घरानों में ठुमरी गायक को स्वीकार किया गया है परन्तु ग्वालियर घराने में इसको विशेष श्रेय नहीं मिला। इस घराने के गायक जो कि ग्वालियर से बाहर रहे, कभी-कभी ठुमरी गाते दिखाई देते हैं लेकिन उनकी गायकी में ठुमरी की अपेक्षा ख्याल अंग ही अधिक दिखाई देता है। इस प्रकार ठुमरी भी एक लोकप्रिय एवं सुन्दर गायन है।

13.3.2 भैरवी

राग - भैरवी

थाट – भैरवी

जाति – संपूर्ण- संपूर्ण

वादी - मध्यम

संवादी - षड़ज

स्वर – ऋषभ, गंधार, धैवत, निषाद कोमल (रे ग ध नी), अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – षडज, मध्यम, पंचम

समय – प्रात:काल

समप्रकृतिक राग – बिलासखानी तोडी

आरोह: सा रे ग म प ध नी सां।

अवरोह: सां, नी ध प, म ग रे सा।

पकड़- म ग रे ग, सा रे सा, ग म प ध प, म ग रे सा।

भैरवी राग, भैरवी थाट का एक महत्वपूर्ण राग है। इस राग की जाति संपूर्ण-संपूर्ण है। भैरवी राग का वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड़ज है। प्रस्तुत राग में ऋषभ, गंधार, धैवत, निषाद कोमल (रे ग ध नी) तथा अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं। इस राग का वादन समय प्रात:काल माना जाता है परंतु इस राग को किसी भी समय बजाया जा सकता है ऐसा विद्वानों का मत है। इस राग में षडज, मध्यम, पंचम स्वरों पर न्यास किया जाता है।

इस राग में सभी 12 स्वरों का प्रयोग भी किया जाता है। इस राग का विस्तार अधिकतर मन्द्र और मध्य सप्तक में किया जाता है। मन्द्र सप्तक में यह राग विशेष रूप से अच्छा लगता है। भैरवी राग में म प ध प स्वर समुदाय बार-बार प्रयुक्त होते हैं।

13.3.3 आलाप

- सा रे सा, ध नि सा, ग रे सा, नि ध प,

  प ध नि सा रे सा।

- सा रे ग ऽ रे ग सा, प ध प, म प ग,

  सा रे ग म प ऽ ध प म प ग म ग,

  सा ग प ऽ म, प ऽ ग म ग ऽ रे सा,

ध़ नि़ सा ग़ रे सा।

- नि़ सा ग़ म प ऽ ध़ प,

  ग़ म प ध़ प,

  नि़ ध़ प, प ध़ नि़ ऽ ध़

  नि़ ऽ प ध़ प,

  म प नि़ ध़ प,

  सा ऽ प प ध़ प म प म ग़,

  सा रे़ ग़ म ग़,

  सा रे़ सा, ध़ नि़ सा रे़ सा।

- ग़ म ध़ नि़ सां, रें़ सां गं़ रें़ सां,

  सां रें़ गं़ सां रें़ मं गं़ सां

  रें़ सां, नि़ सां नि़ सां रें़ सां ध़ प,

  नि़ ध़ प प ऽ प ध़ ऽऽ प,

  ध़ म प म ग़, सा ग़ म प,

  म ग़ सा रे़ सा, ध़ नि़ ध़ सा,

  रे़ सा ग़ रे़ सा।

13.3.4 ठुमरी राग-भैरवी त्रिताल

गंगाधर राव तैलंग, ठुमरी संग्रह संत गायक आ. नानू भैया तैलंग

स्थायी

कान्हां मोरे द्वारे बंसिया बजाए

व्याकुल भई राधा गोरी

अन्तरा

बांसुरी की धुन सुन

भई रे बावरी, तलफ तलफ जिया

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
				ग	रे	-ग	म	गरे	(ग)	रेसा	नीसा	गरे	ग	सा	रे
				का	न्हा	ऽमो	रे	द्वाऽ	रे	ऽऽ	ऽऽ	बं	सि	या	ब
सा	-	सा	-												
जा	ऽ	ए	ऽ												
				ध	सा	-रे	ग	सा	ग	रेसा	नीसा	गरे	(ग)	सा	रे
				का	न्हा	ऽमो	रे	द्वाऽ	रे	ऽऽ	ऽऽ	बं	सि	या	ब
सा	-	सा	-												
जा	ऽ	ए	ऽ												
				-	-	-	-	प	-	प	-	ध	प	म	प
				ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	व्या	ऽ	कु	ल	भ	ई	रा	ऽ
मप	ध	प	म												
धा	ऽ	गो	री												

अंतरा

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
								ग	म	ध	नी	सां	सां	रें	सां
								बां	सु	री	की	धु	न	सु	न
नी	नी	सां	नीसारें	नीसां	ध	प	-								
भ	ई	रे	बाऽऽ	ऽऽ	व	री	ऽ								
								प	प	प	प	प	प	मप	नी
								त	ल	फ	त	ल	फ	ऽजि	या
ध	-	ध	पम												
जा	ऽ	ऽ	ऽय												

13.3.5. भैरवी तानें

- सारे॒ ग॒म गरे॒ सारे॒ ग॒म पम गरे॒ सासा

  ग॒म पम पम ग॒म गरे॒ सारे॒ गरे॒ साऽ

- सारे॒ ग॒म मप ग॒म पम ग॒म गरे॒ सा॒नी॒

सारे गम	गरे साऩी	धप धऩी	साऩीसाऽ
• ऩीसा गम	पऽ मप	गम पम	गरे साऩी
सारे सारे	गरे सारे	ऩीसा ऩीसा	रेसा साऽ
• सांरें गरें	सांनि धनि	सांनि धप	मग रेसा
निसा गम	पध पम	गम पध	निध पम
गम पध	निसां रेंसां	सांनि धप	मग रेसा
• सारे रेग	गम मप	पध धनी	नीसां सारें
सांनी नीध	धप पम	मग गरे	रेसा साऽ
• सारे गम	पध मप	गम गरे	गग रेसा
सारे गरे	गम गम	पम गरे	गग रेसा
• सांनी धनी	धप मप	गम गरे	गग रेसा
ध़ऩी सारे	साऩीसारे	गग रेग	मप धप
पम गम	गरे गग	रेसा रेग	रेसा ऩीसा
• गम धप	मप गम	गरे सारे	ऩीसारेग
सारे गम	पध पम	पग मरे	गग रेसा

• गम पऽ मप गम पम गरे साऽ

• सारे गम गरे सारे गम पम गरे साऽ

- गम पम पम गम गरे सारे गरे साऽ
- सारे गम मप गम पम गम गरे साऽ
- सारे गम गरे साऩी धप धऩी साऩी साऽ
- सारे सारे गरे सारे ऩीसा ऩीसा रेसा साऽ
- सारें गरें सांनि धनि सांनि धप मग रेसा
- निसा गम पध पम गम पध निध पम
  गम पध निसां रेंसां सांनि धप मग रेसा
- सारे रेग गम मप पध धनी नीसां सारें
  सांनी नीध धप पम मग गरे रेसा साऽ
- सारे गम पध मप गम गरे गग रेसा
- सारे गरे गम गम पम गरे गग रेसा
- सांनी धनी धप मप गम गरे गग रेसा
- ध़ऩी सारे साऩी सारे गग रेग मप धप
  पम गम गरे गग रेसा रेग रेसा ऩीसा
- गम धप मप गम गरे सारे ऩीसा रेग
  सारे गम पध पम पग मरे गग रेसा

13.3.4 ठुमरी राग-मिश्र पीलू अद्धा ताल

(पं. रवि शंकर)

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
								-	ग	रे	ग	सा	रे	ऩी	सा
ध़ऩी	ध़	-	ऩी	सा	रेरे	ऩी	सा								
								-	गग	-ग	-सा	रे	ग	म	सा
रे	म	पऩी	प	रे	ग	ऩी	सा								
								-	रेप	-प	-प	ध	नी	ध	प
-	प़ऩी	-ऩी	-ऩी	सा	सा	ध़	प़								
								-	प़ऩी	-ऩी	-ऩी	सा	सा	ध़ऩी	ध़
-	ऩीसा	-रे	-प	ग	रे	ऩी	सा								
								-	ग	रे	ग	सा	रे	ऩी	सा
ध़ऩी	ध़	-	ऩी	सा	रेरे	ऩी	सा								
								-	गग	-ग	-सा	रे	ग	म	सा
रे	म	पऩी	प	रे	ग	ऩी	सा								
								-	रेप	-प	-प	ध	नी	ध	प
-	प़ऩी	-ऩी	-ऩी	सा	सा	ध़	प़								
								-	प़ऩी	-ऩी	-ऩी	सा	सा	ध़ऩी	ध़
-	ऩीसा	-रे	-प	ग	रे	ऩी	सा								

स्वयं जांच अभ्यास 1

13.1. ठुमरी एक श्रंगारिक शैली है।

(क) हां

(ख) नहीं

13.2. ठुमरी में गमक का प्रयोग अधिक होता है?

(क) हां

(ख) नहीं

13.3. श्री गिरीजा देवी एक प्रसिद्ध ठुमरी गायिका रही हैं।

(क) हां

(ख) नहीं

13.4. उ. बड़े गुलामअली खां पूर्वी अंग की ठुमरी के एक प्रसिद्ध गायक रहे हैं। ?

(क) हां

(ख) नहीं

13.5. ठुमरी कितनें अंगों से गाई जातती है।

(क) 2

(ख) 5

(ग) 7

(घ) 1

13.7. आधुनिक ठुमरी का विकास मुख्य रूप सें किस दरबार में हुआ।

(क) ग्वालियर

(ख) अवध

(ग) आगरा

(घ) दिल्ली

13.7. ठुमरी का पूर्व अंग किस क्षेत्र में प्रचलित है।

(क) पंजाब

(ख) अवध

(ग) लखनऊ

(घ) दिल्ली

13.7. ठुमरी का पंजाब अंग किस क्षेत्र में प्रचलित है।

(क) दिल्ली

(ख) लखनऊ

(ग) हरियाणा तथा पंजाब

(घ) पंजाब

13.4 सारांश

भाव प्रधान तथा चपल चाल वाला गीत है, ठुमरी। इसका रस श्रृंगार प्रधान होता है। ठुमरी गीत नाज़ुक तथा चपल प्रवृति का होने के कारण इसको गाने के लिए वैसे ही रागों को चुना जाता है। खमाज, काफी, मांड, बरवा, तिलंग, पीलू तथा भैरवी जैसे रागों को पसन्द किया जाता है। इसकी कोमलता के अनुपात से छोटी-छोटी तानों एवं मुरकियों का प्रयोग इसमें किया जाता है। आधुनिक ठुमरी का विकास अवध के दरबार में हुआ। लखनऊ के नवाब वाजिद अली शाह

उच्चकोटी के रसिक एवं नर्तक थे। उन्होंने राधा-कृष्ण के संयोग-वियोग को लेकर कई ठुमरी गीतों की रचना करवाई। ठुमरी दो अंगों से गाई जाती है - पूर्व अंग और पंजाब अंग। पूर्व अंग लखनऊ तथा बनारस में प्रचलित है और बोल-बनाव के लिए प्रसिद्ध है। पंजाब अंग की ठुमरी, टप्पे की छोटी-छोटी तानों तथा विचित्र स्वरावलियों को लेकर आगे बढ़ती है।

13.5 शब्दावली

- ठुमरी: यह एक भावप्रधान तथा चपल चाल वाला श्रृंगार प्रधान गीत है।
- पूर्व अंग की ठुमरी: इसका प्रसार विशेष रूप से उत्तर भारत के पूर्वी क्षेत्रों (उत्तर प्रदेश और बिहार) की ओर अधिक है।
- पंजाब अंग की ठुमरी: इसका प्रसार विशेष रूप से पंजाव तथा आसपास के क्षेत्रों की ओर अधिक है।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

13.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

13.1 उत्तर: क)

13.2 उत्तर:ख)

13.3 उत्तर: क)

13.4 उत्तर: ख)

13.5 उत्तर: क)

13.6 उत्तर: ख)

13.7 उत्तर: ग)

13.7 संदर्भ

गंगाधर राव तैलंग (1977). ठुमरी संग्रह संत गायक आ. नानू भैया तैलंग, उ.प्र. संगीत नाटक अकादमी, लखनउ।

13.8 अनुशंसित पठन

देवांगन, तुलसीदास (2013). ठुमरी गायकी, संगीत कार्यालय, हाथरस।

गंगाधर राव तैलंग (1977). ठुमरी संग्रह संत गायक आ. नानू भैया तैलंग, उ.प्र. संगीत नाटक अकादमी, लखनउ।

13.9 प्रश्नावली

प्रश्न 1. ठुमरी के विषय में लिखें।

प्रश्न 2. किसी एक ठुमरी को गाकर सुनाइए।

प्रश्न 3. किसी एक ठुमरी को भातखंडे स्वरलिपि में लिखें।

प्रश्न 4. ठुमरी को बजाकर बताइए।

महत्वपूर्ण प्रश्न - कार्यभार

प्रश्न 1. राग शुद्ध सारंग का परिचय लिखिए। (गायन तथा वादन के लिए)

प्रश्न 2. राग शुद्ध सारंग में आलाप को लिखिए। (गायन तथा वादन के लिए)

प्रश्न 3. राग शुद्ध सारंग में विलम्बित ख्याल को तानों सहित लिखिए। (गायन के लिए)

प्रश्न 4. राग शुद्ध सारंग में द्रुत ख्याल को तानों सहित लिखिए। (गायन के लिए)

प्रश्न 5. राग शुद्ध सारंग में विलम्बित गत को तोड़ों सहित लिखिए। (वादन के लिए)

प्रश्न 6. राग शुद्ध सारंग में द्रुत गत को तोड़ों सहित लिखिए। (वादन के लिए)

प्रश्न 7 राग बागेश्री का परिचय लिखिए। (गायन तथा वादन के लिए)

प्रश्न 8. राग बागेश्री में आलाप को लिखिए। (गायन तथा वादन के लिए)

प्रश्न 9. राग बागेश्री में विलम्बित ख्याल को तानों सहित लिखिए। (गायन के लिए)

प्रश्न 10. राग बागेश्री में द्रुत ख्याल को तानों सहित लिखिए। (गायन के लिए)

प्रश्न 11. राग बागेश्री में विलम्बित गत को तोड़ों सहित लिखिए। (वादन के लिए)

प्रश्न 12. राग बिहाग में द्रुत गत को तोड़ों सहित लिखिए। (वादन के लिए)

प्रश्न 13. राग बिहाग का परिचय लिखिए। (गायन तथा वादन के लिए)

प्रश्न 14. राग बिहाग में आलाप को लिखिए। (गायन तथा वादन के लिए)

प्रश्न 15. राग बिहाग में विलम्बित ख्याल को तानों सहित लिखिए। (गायन के लिए)

प्रश्न 16. राग बिहाग में द्रुत ख्याल को तानों सहित लिखिए। (गायन के लिए)

प्रश्न 17. राग बिहाग में विलम्बित गत को तोड़ों सहित लिखिए। (वादन के लिए)

प्रश्न 18. राग बिहाग में द्रुत गत को तोड़ों सहित लिखिए। (वादन के लिए)

प्रश्न 19. ठुमरी की स्वरलिपि लिखिए। (गायन के लिए)

प्रश्न 20. ठुमरी की स्वरलिपि लिखिए। (वादन के लिए)